श्री योग अनुभव वाणी

त्रै–मासिक पत्रिका RNI No.DELHI-2004-14338

वर्ष–10
अंक–2
अप्रैल - जून 2013

संस्थापक
स्वामी अनुभवानन्द जी पुरी

मुद्रक
श्रीमती सुदेश पिलानी

मुद्रित
एलाईड ट्रेडर्स
2250, कुचा चेलान, दरिया गंज
नई दिल्ली–2

सम्पादक व प्रकाशक
श्रीमती सुदेश पिलानी
FA.47, विशाल कालोनी, नांगलोई
दिल्ली–41, फोनः 011–25943489

अनुक्रमणिका

'श्री योग अनुभव वाणी' पत्रिका के संस्थापक, मुद्रक, सम्पादक श्रीमती सुदेश पिलानी, एफ ए 47, विशाल कालोनी, नांगलोई, दिल्ली–41 द्वारा प्रकाशित एवं एलाईड प्रिन्टर्स द्वारा मुद्रित की गई। पत्रिका में छपे लेखों से सम्पादक का एकमत होना अनिवार्य नहीं है। हर विवाद का न्यायालय क्षेत्र दिल्ली होगा। फोनः 011-25943489

चित चिन्ता प्रभु याद बिन, मुझको कबहुं न सुहाय। रात दिवस रटता रहूं, 'योग' कब मिलेंगे आये ।।

प्रार्थना

श्री सतगुरु देव जी! आपके चरणों में मेरा कोटि-कोटि नमन!

हे प्रभु! हे जीवन के आधार! हे दयालु गुरुदेव!

आप ही ज्योतिमय हैं, प्रकाशमय हैं, इसलिए हम विनती करते हैं। हे प्रभु! जो असत् है, उस असत् के पथ से हमको सुपथ पर ले चलिये। जो मार्ग हमको भटकाते हैं, जिन मार्गों पर चलते-2 जीवन के लक्ष्य से हम दूर हो जायें, उस मार्ग से हमको बचाईये और जिस मार्ग पर चलने से हम अपने जीवन में उन्नत हों, सुखी हों, प्रसन्न हों, शान्त हों, आनन्दित हों। हे प्रभु! वही मार्ग हमको देना।

हे दयालु गुरुदेव हमारी विनती यही है कि जो हमारे जीवन में अन्धेरा है, उसके पार हम निकल सकें, अपने अन्धेरों के पार, समस्याओं से दूर, आगे बढ़कर इन सब स्थितियों को जीतकर जो प्रकाशका मार्ग है, उसका आवलम्बन करें।

हे दयालु गुरुदेव! हमारी यही प्रार्थना है कि जो पीड़ा है, दुःख है, सन्ताप है, उन सबसे हम ऊपर उठ जायें, उनसे बच सकें। हमारा हर कर्म शुभ कर्म हो जाये, हमारा अन्तःकरण पवित्र हो, हमारा जीवन खुशियों से और आनन्द से भरपूर हो जाये।

– जय गुरुदेव
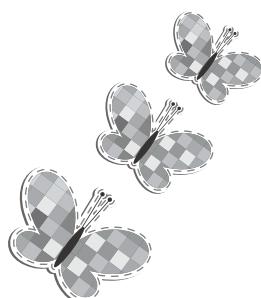
होणहार तिन्हा ते होई, जो लक्ष्मण राम कहाया।
होणहार तिन्हा ते होई, जो यादव वंश कहाया।।
होणहार दस सिर ते होई, जदों सीता लै के आया।
साईं दस होणी नहीं मिटदी, होणी मार मुकाया।।
''होणी को प्रणाम है, होणी है बलवान।
इस होणी ने कर दिए, राजा रंक समान।।

कविता
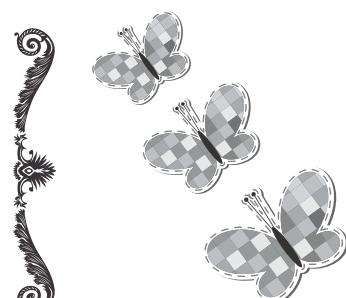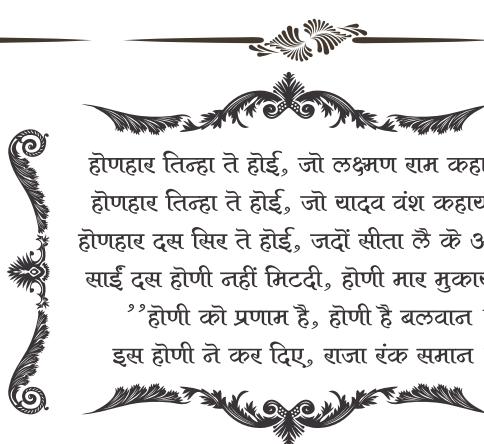
होली के रंग

फागुन मास रंगीला आया
होली का उत्सव है छाया।
मस्ताना मदमाता मौसम
झूमें नाचे गायें सब जन ।।

बोले होली है भई होली
खायें गुझियां और मिठाई ।
घोटें भांग और पियें ठण्डाई
गले मिले जैसे सब भाई-2 ।।

भाँति-2 के रंग लुभावन
प्रेम का रंग सबसे मन भावन।
प्रेम के रंग में सब रंग जायें
जीवन को खुशहाल बनायें।।

खेलें सभी प्रेम से होली
बोलें सभी स्नेह की बोली ।
मिलें गायें बन के हमजोली
ऐसी है अनुपम ये होली ।।

एक दिन किसी ने पूछा कि कब होती है होली
उत्तर मिला- जिस दिन रंग में सरोबार हो जायें।
सभी भेदभाव भूलकर करें हंसी ठिठोली
खुशियों से भर जाये सबकी झोली
समझ लो उस दिन है होली ।।

राम बुलावा भेजया, दिया कबीरा रोय।
जो सुख साधु संग में, सो बैकुण्ठ न होय।।

दवा और दुआ

वस्तुत: दो ही चीजें हैं जो मनुष्य को स्वस्थ रखती हैं, दवा और दुआ। दवा ज्ञान है, दुआ भक्ति है, हृदय है। हृदय प्रार्थना है, बुद्धि पुरुषार्थ हैं। इसलिए केवल दो ही चीजों की आवश्यकता है। हाथों से बुद्धिपूर्वक पुरूषार्थ करने में कसर नहीं छोड़ना और हृदय से प्रार्थना जरूर करना कि मैं कुछ करने वाला नहीं, मेरे पास कुछ शक्ति है ही नहीं। अपने अहंकार को समाप्त कर यही कहना कि हे प्रभु! तुम ही सहारा देना। मेरी मति को सुमति बनाना। जिससे मैं इस संसार में कर्त्तव्य पूरे कर सकूं। इसलिए ज्ञानपूर्वक पुरुषार्थ एवं हृदय से की गई प्रार्थना का मेल मिलाइये। दोनों का संतुलन आवश्यक है।

भक्ति में केवल ज्ञान के शब्द ही न बोलें, वरन् हृदय भी बोले। शरीर का रोम-2 समस्त ऊर्जा, समस्त चेतना उनके चरणों में केन्द्रित हो जाए, तब चमत्कार घटना प्रारम्भ हो जाता है।

ब्रह्म ज्ञान-भक्ति, सेवा और साधना, प्रार्थना और पुरूषार्थ इस सभी द्वित्वों के एकत्व का नाम ही आनन्द है, जो परमात्मा से जोड़ देता है जहाँ पहुँच कर सभी द्वित्व समाप्त हो जाते हैं, रह जाता है तो एकत्व! जिसे सिर्फ अनुभव किया जा सकता है।

– जय गुरुदेव
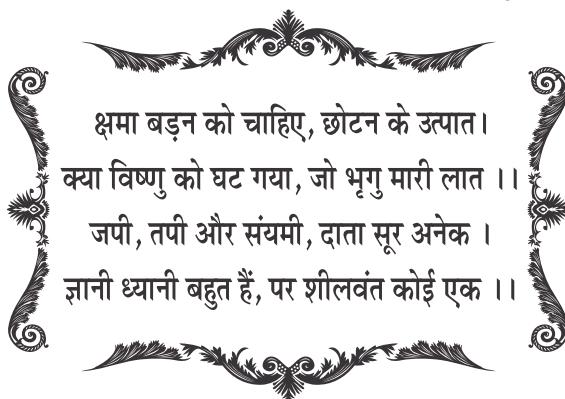
क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन के उत्पात।
क्या विष्णु को घट गया, जो भृगु मारी लात ।।
जपी, तपी और संयमी, दाता सूर अनेक ।
ज्ञानी ध्यानी बहुत हैं, पर शीलवंत कोई एक ।।

आर्शीवाद

महान् सिख गुरु अर्जुनदेव जी की पत्नी गंगादेवी का मन नि:सन्तान होने के कारण अशांत रहता था। गुरुजी ने एक दिन कहा, ''तुम ब्रह्मज्ञानी संत बाबा बुड्ढा जी के पास जाओ। तुम्हें निश्चय ही शान्ति मिलेगी।

माता गंगादेवी ने तरह-2 के पकवान तैयार किये और रथ में बैठकर बाबा जी की तपोस्थली पर जा पहुँची। बाबा जी ने रथ को देखा तो समाधि में लीन हो गये। माता जी को बिना आर्शीवाद के ही लौटना पड़ा। गुरु अर्जुनदेव जी को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने गंगादेवी को समझाते हुए कहा, ''बुड्ढा बाबा पूर्ण ब्रह्मज्ञानी महापुरूष हैं। उनका आर्शीवाद प्राप्त करना है तो नंगे पाँव सादगी से जाना होगा।

अगली सुबह माँ गंगा ने अपने हाथों से रोटियाँ बनाई। एक बर्तन में लस्सी भरी। वे रोटियाँ व लस्सी सिर पर रखकर नंगे पाँव आश्रम में पहुँची। बाबा जी अगवानी के लिए स्वयं बाहर आये और बोले, ''माता जी! मुझे आज बहुत भूख लगी थी। गुरु जी ने मेरी आवाज सुन ली, लाओ मुझे रोटियाँ खिलाओ।

लस्सी के साथ रोटियाँ खाने के बाद बाबा जी ने आर्शीवाद देते हुए कहा, ''माता जी आपके यहाँ ऐसा महाप्रतापी पुत्र होगा जो न्याय और धर्म की रक्षा के लिए दुश्मनों से संघर्ष करेगा। अधर्मी और अन्यायी उसके नाम से काँपेंगे।

माँ गंगादेवी बाबा बुड्ढा जी का आर्शीवाद प्राप्त कर गद्गद् हो गई। आगे चलकर उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया, जो सिखों के छठे गुरु ''श्री गुरु हरगोबिन्द सिंह'' जी के नाम से विख्यात हुए।

जीवन परिचय

श्री श्री 1008 श्री योगशब्दानन्द जी महाराज, एक दिव्य मूर्ति, जिनकी दिव्यदृष्टि जहाँ-2 पड़ती वहाँ-2 गम, परेशानियों के बादल छट जाते। श्री गुरु महाराज जी के दरबार में नाना प्रकार की भावनाओं से भरी हुई संगतें अनेक प्रकार के नजारे देखती हैं। एक बार एक देवी बड़ी विश्वासी पूर्ण श्रद्धालू नित्यप्रति श्री गुरु महाराज जी की आरती-पूजा व ध्यान किया करती थी। एक बार वह बहुत बीमार हो गई, उठना-बैठना मुश्किल हो गया। आरती-पूजा छूट गई। एक बार श्री गुरु महाराज जी ने उन्हें दर्शन दिए, क्यों तूँ आरती-पूजा छड के बह गई ऐ, नी रोज सेवेरे उठया कर। उस देवी ने कहा- श्री गुरु महाराज जी, मैं उठ नहीं सकती, शरीर कमजोर है, नींद आ जाती है। श्री गुरु महाराज जी ने फरमाया- नीं असी तैनूं रोज उठावांगे। उसने हाथ जोड़कर कहा, अच्छा महाराज जी! ...... तो गुरुदेव अर्न्तध्यान हो गये। दूसरे दिन सुबह-2 प्रातः 4 बजे दरवाजा खटका और आवाज आई, उठ नी सिमरण कर, सिमरण दा वेला है। सिमरण नाल दुःख कटदे ने...... आवाज कानों में पड़ते ही वो उठ बैठी। उसने अपनी ये बात अपने बच्चो को बताई। बच्चे कहने लगे, हम तो ये नहीं मानते कि श्री गुरु महाराज जी आपको उठाने आते हैं। यही कहना ही था कि उन्हें नींद आ गई। वो उस दिन श्री गुरु महाराज जी की आवाज़ सुन नहीं पाई और यह आवाज घर के सभी सदस्यों ने सुनी तो सबको पूर्ण विश्वास हो गया कि यह सब सच है। तबसे उनके सर्वपरिवार की आस्था भी गुरुदेव के चरणों में और अत्यधिक हो गई और आज भी सभी श्रद्धालू भक्त बड़ी भावना से गुरु घर में आते हैं और गुरु घर की सेवा करते हैं। अब हर तरफ से उनका जीवन सुखमयी, शान्तमयी बनने लगा। श्री गुरु महाराज जी ने ऐसी-2 अनन्त कृपायें अपने भक्तों पर की। बस जहाँ-2 इनकी कृपा दृष्टि हो जाए, वहाँ-2 मानो बसन्त आ जाता है। जीवन बगिया की भाँति महकने लगता है। बिल्कुल ऐसी ही अनन्त कृपायें श्री श्री 1008 श्री स्वामी अनुभवानन्द महाराज जी भी अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में करते आये। उन्होंने भी भक्तों पर वैसी ही कृपा बरसाई, जैसे ही श्री गुरुमहाराज जी बरसाया करते। जहाँ भी श्री स्वामी जी महाराज जी की दृष्टि पड़ गई, वहीं काम बन गये। जिसके लिए भी उनके वचन सूर्य की प्रकाशमयी किरणों की भाँति स्फुटित हो गये। इतना प्रताप होता है पूर्ण सन्तों के आर्शीवादों में तो क्यों ना हम भी अपनी आस्था को दृढ़ बनाते हुए पूर्ण गुरुदेव की आर्शीवादों के पात्र बनें।

श्री-श्री 108 श्री योग शब्दानन्द जी महाराज

आइये ऐसी ही चेष्टाओं के साथ संत सुखदेवानन्द महाराज जी के मार्गदर्शन में, उनके सानिध्य में, उनके आर्शीवादों को संग लिए जीवन में श्री गुरु महाराज जी एवम् श्री स्वामी जी महाराज जी की अनूठी कृपाओं के पात्र बनें।

– जय गुरुदेव

श्री गुरु योग जी मणका 108

गुरु योग जी मौज में थे जब
गमला उतारने का आदेश दिया तब।
भगत से गल्ती हुई महान्
जय हो मेरे योग भगवान ।।

आँधी आ गई सांयकाल में
गमला गिरा धरती पे आके।
गुरुजी की बातों में रहस्य महान्
जय हो मेरे योग भगवान ।।

सबसे प्रेम मूलमन्त्र था
प्रसन्न रहे सब यही भावथा।
उच्च कोटि के सन्त महान्
जय हो मेरे योग भगवान ।।

16 अगस्त को कहर बरस गया
प्रेमियों का दिल छलनी कर गया।
अन्धकार फेला है जहान
जय हो मेरे योग भगवान ।।

ब्रह्म विद्या का महान् सूर्य जब
छिप गया– चल के दामन में।
हताश हो गया सारा जहाँ
जय हो मेरे योग भगवान ।।

जैसा कल था आज नहीं है
सब कुछ लुटा–2 सा आज है।
हर आँखों ने किया ब्यान
जय हो मेरे योग भगवान ।।

पंचभूतों की निज इच्छा से
त्याग ज्योति ज्योत समाए।
अपने लोक को किया प्रस्थान
जय हो मेरे योग भगवान ।।

श्री सन्त सुखदेवानन्द महाराज जी ने लीला गाई
मन लगाकर सुने जो भाई
बन जायें उसके बिगड़े काम
जय हो मेरे योग भगवान ।।

गुरु नाम का मनका, फेरे जो दिन–रात।
बिन मांगे सब पायेगा, इसमें है करामात।।

बोलो भई सब सन्तन की जय–2
– जय गुरुदेव

अनुभव जी का अनुभव

1. अनुभवी व्यक्ति अलग से ही पहचानते जाते हैं। दूरदर्शिता उनके व्यक्तित्व से झलकती है। वे हमेशा दृष्टांत बन जाया करते हैं तथा जल्दी निराश नहीं होते। उनमें दृढ़ता, साहस, और आत्मविश्वास होता है। वे परिस्थितियों का डअकर मुकाबला करते हैं।

2. अनुभव विवेक को समृद्ध करते हैं और दूरदर्शिता सफलता को नए आयाम देती है। दोनों के संयोग से व्यक्ति में पूर्णता आ जाती है। अनुभवों से सीखिए, फिर देखिए कि आपकी जिन्दगी के रास्ते कितनी जल्दी आसान हो जाते हैं।

– जय गुरुदेव

{ गुरुदेव का आर्शीवाद }

अंग संग बनते सतगुरु, जो है श्रद्धावान ।
श्रद्धावान को ''अनुभव'', देते मुक्ति धाम ।।

*

सत्संग को ''अनुभव'', मान सरोवर जान ।
चुग लै मोती ज्ञान के, बन के हंस समान ।।

*

एक मन लागा रहे, अन्त मिलेगा सोई ।
दादू जाके मन बसे, ताको दर्शन होई ।।

*

संगत नीचो ऊंच करे, कुसंगत ऊंचों नीच ।
ऊंचा नीचा कोई नहीं, रंगत संगत बीच ।।

*

जहॉ सुमित तहां सम्पति नाना ।
जहॉ कुमति तहां विपति निधाना ।।

*

सबसे बड़ी तपस्या, जो करे गुरु की सेव ।
सेवा में इन्कार नहीं, ओ पावे मुक्ति मेव ।।

*

जन्म लिया हरि विसरा, माया ममता देख ।
राम-नाम की भूल से, उल्टी पड़ गई रेख ।।

*

दान दिया हंकार से, रख के चाहना मान ।
दान दिया निष्फल गया, सुण लै तूँ इन्सान ।।

चिन्ता छोड़ चिन्तन में मन लगा

श्री स्वामी जी महाराज जी के स्वलिखित जीवंत लेख जो आज भी हमें प्रेरित करते हैं, ज्ञान देते हैं और जीवन–गंगा में आनन्द की धाराएं बहा देते हैं। आपके समक्ष आर्शीवाद रुप प्रस्तुत हैं –

बीती को चितबे नहीं, आगे धरे ना आस ।
आई को मस्तक धरे, पलटू ताको दास।।

हे इन्सान! मन के एकाग्र ना होने के दो ही कारण हैं। एक बीते समय की याद और दूसरा आने वाले समय की चिन्ता। कभी तो मन भूतकाल में दौड़ जाता है, मैं इतना सुखी था, बड़े आनन्द में रहता था, मेरे पास इतनी माया थी, कार–कोठियाँ थी, सब कुछ समाप्त हो गया। बस इसी उधेड़बुन में मस्त हो जाता। कभी दुःख कभी सुख को याद करके आँसू बहा रहा है, तो कभी भविष्यकाल में पहुँच जाता है। ना जाने आने वाला कल कैसा होगा? मेरा परिवार मेरा बनेगा या नहीं? मेरी सन्तान मेरा कहना मानेगी या नहीं? इसी तरह इन्हीं दो अवस्थाओं में मस्त हुआ जीव अपने वर्तमान समय को व्यर्थ गंवा देता है और फिर कहता है, मेरा हरिभजन में मन नहीं लगता। मन तो एकाग्र तब होगा, जब इसे भूत और भविष्य दोनों से हटाकर वर्तमान में स्थिर कर लेंगे। गीता में भी भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा– हे अर्जुन! तुम किस बात की चिन्ता करते हो? तुम साथ लाए ही क्या थे, जो तुम्हारा खो गया?

परमहंस स्वामी श्री अनुभवानन्द जी पुरी

बीते हुए कल की चिन्ता करने से वह समय बदलेगा नहीं। आने वाले कल की चिन्ता करने से भी कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि हमारे चिन्ता करने से आने वाला कल हमारे अनुकूल नहीं बन जायेगा। जैसे –

छडदे चिन्ता तूँ इन्सान!
ध्याले–2 तूँ भगवान !!

चिन्ता जीव को ऐसे खावे
जैसे घुण लकड़ी को थोथा बनावे,
दुःखों की दाती चिन्ता जान ।
छडदे ....
चिन्ता जैसी नहीं बीमारी
जन्म–2 में रहे खुवारी,
प्रेतनी सबसे चिन्ता मान ।
छडदे ....
दुनियां वाली तजदे चाहना
जेकर मनुवा शान्त बनाना
'अनुभव' तेरा हो कल्याण
छडदे ....
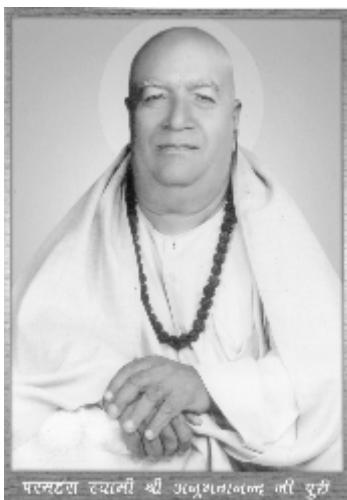
जीव का कर्तव्य है कि चिन्ता छोड़ चिन्तन में मन लगा और अगर उस परमात्मा के नजारों को पाना है तो अपनी वृतियों को एकाग्र कर ले और उसके लिए खो जायें अपने वर्तमान में। क्योंकि हर कार्य को करने के लिए पहले उसमें पूरी तरह से खोना पड़ता है। यदि एकाग्र नहीं हुए तो वह कार्य उतना अच्छा नहीं हो पायेगा, जितना होना चाहिए। इसलिए प्रभु–प्राप्ति के लिए भी स्वयं को हर प्रकार के चिन्तन से निकालना होगा और फिर स्वतन्त्र हो

कर उड़ सकेंगे परमपद के अन्दर। जिस प्रकार एक तोता पिंजरे में बंद है और वह पिंजरे से बाहर जाने के लिए बहुत छटपटाता है, परन्तु निकल नहीं पाता। मालिक सोचता है कि इसे पिंजरे में रखता हूँ तो यह दु:खी होता है और यदि बाहर निकालता हूँ तो भी भय है कि कहीं उड़ ही न जाये। यह विचार कर मालिक उस तोते को उड़ने वाले दोनों परों को काट डालता है और इसे पिंजरे से बाहर स्वतन्त्र छोड़ देता है। अब मालिक को किसी प्रकार का भय नहीं, चाहे तोता पिंजरे में रहे या फिर पिंजरे से बाहर।

इसी प्रकार इस मन रुपी तोते को भी यदि साधना रूपी पिंजरे में बंद रखा जाये तो यह भी वासना पूर्ति रूपी आकाश में उड़ने की कोशिश करता है और यदि इसे संसार के अन्दर स्वतन्त्र छोड़ा जाए तो यह भोगों में मस्त हो जाता है। इसलिए विवेकी मनुष्य इसके भूत और भविष्य रूपी दोनों परों को काट देते हैं। फिर यह ध्यान साधना काल में भी स्थिर रहता है और यदि संसार में रहे, तब भी चंचल नहीं हो पाता। क्योंकि सिमरण समाधि में बैठे हुए यदि मन में किसी प्रकार की कोई तरंग ही नहीं होगी तो यह उड़कर कहीं जा ही नहीं सकता।

मन को राख हटक कर, सटकि चहुं दिस जाय।
सुन्दर लटक और लालची, भटक विष फल खाय।।

इसलिए वर्तमान समय को सम्भालना सीखें और जीवन को सुन्दर सजायें ताकि हर पल खुशी व आनन्द से भरपूर हो।

ये तो बात है अटपटी, सटपट लखे न कोय।
जब मन की खटपट मिटे, झटपट दर्शन होय।

भक्त की कलम से.........

हमारे पूजनीय श्री श्री 1008 ब्रह्मलीन श्री स्वामी अनुभवानन्द जी महाराज जी अक्सर कहा करते कि भगवान शंकर हमारे सन्तों के इष्टदेव हैं।

ब्राह्मण गुरु सन्यासी ।
सन्यासी गुरु अविनाशी ।।

हर जीव जानता है कि गंगा मैया भगवान शकर की जटाओं से निकली है। गंगा जी मोक्ष दायिनी, पाप हरनी, दु:ख हरनी माता है। गंगा जी का जल– जल नहीं अमृत है। इसलिए जो श्रद्धालू गंगा मैया जी के दर्शन करने व स्नान करने जाते हैं, वे गंगा जल अपने घर अवश्य लाते हैं, क्योंकि ये अमृत जीव के जन्म से लेकर अन्तिम मृत्यु तक काम आता है।

शिवरात्रि पर भोले शंकर पर गंगा जल ही चढ़ता है। जल भगवान शंकर पर चढ़ाने से पहले शिव परिवार पर जल चढ़ायें। प्रथम पूजनीय श्री गणेश जी, कार्तिक जी, नन्दी जी, नागदेव, माँ पार्वती और फिर भगवान शंकर जी की पिण्डी पर जल चढ़ायें। शिवालय (शिव परिवार) पर जल जरुर चढ़ायें। जो जल पिण्डी से नीचे आता है, उसका चरणामृत लेना चाहिए, मस्तक पर, आँखों पर, जोड़ों पर भी ये जल अवश्य लगायें। इससे ना तो जीव को सिरदर्द होगा, ना ही कहीं दर्द होगा। आँखों की रोशनी में भी कमी नहीं आयेगी और शरीर के जोड़ों में भी दर्द नहीं होगा।

अमृत के सेवन से शरीर में कोई दु:ख दर्द नहीं आता, क्योंकि भगवान शंकर का, माँ गंगा जी का आर्शीवाद है। यह विधि मैं पिछले 50 वर्षो से अपना रहा हूँ। जिसके फलस्वरूप मुझे आज तक सिर दर्द तक नहीं हुआ, आँखें भी ठीक हैं और जोड़ों में भी दर्द नहीं है। – जय गुरुदेव

शिवदयाल गोगिया, मितल नगर, हिसार

नम्रता भरा जीवन हो, मधुर हो तुम्हारी वाणी।
पढ़ लिख कर महान बनो, ये सन्तों की वाणी।।

पीयूष भाटिया
17 मई

भव्य
4 जून

नैना बत्रा
6 जून

नीरज बब्बर
27 जून

करूणा अरोड़ा
6 जून

प्राची मनचन्दा
28 जून

सुख-दुःख समझो एक समान

दुःख आता है सुख देने को
मन मूर्ख क्यों घबराता है।
जब जोर से गर्मी पड़ती है
तो बादल मेह बरसाता है।।

दुःख जैसे ही हद पर पहुँचेगा तो फिर वह वापिस जायेगा यानि सुख का आगमन होगा। जैसे तेज गर्मी पड़ती है, तो वर्षा जरूर होती है। इसलिए अगर दुःख के दिन हैं तो सुख के दिन अवश्य आयेंगे। घबराना नहीं चाहिए। हिम्मत से आगे बढ़ते रहना चाहिए। दुःख आए तो भगवान का ध्यान जरूर कर लेना, क्योंकि उसमें उनकी कृपा मिलती है, शक्ति मिलती है। चाणक्य ने समझाया- चार चिन्ह हैं, चार निशानियाँ हैं, इस शरीर में जो लोग स्वर्ग में रह रहे हैं या जिनके साथ स्वर्ग चल रहा है। पहली निशानी- जो दान करते हैं। दान से मतलब केवल धन ही नहीं देना है।

सन्त सुखदेवा नन्द जी

सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते!

जितने दुनियाँ में दान हैं, उन सबसे अच्छा दान है किसी को ज्ञान देकर, किसी के अज्ञान का हरण करके, उसके दुःखों को मिटाना। यदि कोई किसी को जोश में होश देकर उसे सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते हुए उसे उसकी मंजिल तक पहुँचाने में सफल हो जाता है और सक्षम हो जाता है तो समझ लेना कि ये दान करने वाला व्यक्ति सबसे बड़ा दानी है।

एक तो होते हैं- धर्मवीर!
एक होते हैं - दानवीर !
और एक होते हैं - कर्मवीर!

आप कौन से वीर हैं और चौथे नम्बर पर माना गया है शूरवीर! शूरवीर वह है जो अन्याय से लड़े। दानवीर वह जो अभाव से लड़े। धर्मवीर वह जो अज्ञानता से लड़ता है। अगर आप चारों चीजों से लड़ सकते हो तो आप सबसे बढ़कर दानी हैं, दाता हैं और आपका स्थान सबसे बड़ा है। दूसरों पर कृपा करते हुए महान बनो, लेकिन अपना हाथ फेलाकर अपने आपको कभी नीचा मत करो। देकर अपने सुख को और बढ़ाईये। दूसरों को अच्छे कर्म में प्रवृत करने की कोशिश कीजिए। किसी की भलाई के कार्यो में, सेवा के कार्यों में अपने मन को लगा लें। यह बहुत बड़ा दान है। यह काम तो आप कर ही सकते हैं।

रोते हुए को हंसाईये। आलसी इन्सान के अन्दर पुरुषार्थ जगाइए, अज्ञान में डूबे व्यक्ति को आप समझा दीजिए। अधर्म करते व्यक्ति को समझाइए कि धर्म क्या है? पाप-पुण्य क्या है? लक्ष्य क्या है? ऐसे व्यक्ति जिनसे कोई बात नहीं करता, उनके पास बैठकर थोड़ी देर सत्संग की बातें यानि अच्छी बातें कीजिये। रास्ते में पड़े हुए केले के छिलके देखें तो उठाकर अलग रख दीजिए। गड्ढ़ा अगर कहीं है तो उसके ऊपर कोई निशान लगा दें या मिट्टी भरवा दें। साधारण जीवों पर दया करना सीखें।

बहुत बड़े-2 महान् पुरुष हुए हैं। एक बात स्वामी दयानन्द जी से एक गरीब आदमी ने आकर कहा- मैं कुछ भी दान करना चाहता हूँ, संसार को। मेरी इच्छा तो देने की है, पर मेरे पास कुछ भी तो नहीं। मैं क्या दान करूं दुनियाँ को? उन महात्मा ने पूछा- तुम यह बताओ कि तुम क्या काम कर सकते हो? व्यक्ति कहने लगा महाराज! मैं गरीब आदमी हूँ। मैं इतना कमाता हूँ कि मुश्किल से मेरा काम चल पाता है। महात्मा बोले- एक दान तुम कर सकते हो-

जैसे बूंद-2 बरसती है, तो चारों तरफ नदी बहने लगती है। ऐसे ही बूंद-2 मिलाकर तो सागर बनता है। व्यक्ति-2 से ही तो समाज बनता है, व्यक्ति-2 से ही विश्व

बनता है। जिस दिन एक-2व्यक्ति स्वयं अपना जिम्मा लें कि मैं अपने आपको सुधार रहा हूँ, दुनियाँ सुधरेगी, उस दिन सारा विश्व सुधरने की स्थिति में आ जायेगा।

जिनका हाथ सहयोग के लिए उठता है, जिनकी वाणी में माधुर्य है, मीठापन है, कड़वा बोलते ही नहीं..... तो मानना कि ये लोग स्वर्गीक जीव हैं। कैसी भी परिस्थिति हो, अपने माधुर्य को छोड़िए नहीं। अनुकूल वातावरण में तो सब ही मधुर हैं, मीठा बोलते हैं। जब सामान्य व्यवहार चल रहा हो तो आप खुश हैं, प्रसन्न हैं। तो उस अवस्था में तो आप मधुर हैं ही। लेकिन आपके ऊपर जब आयेगा तनाव और आयेगी विपरीत परिस्थिति। आप दु:ख में हैं, पीड़ा में हैं, तनाव के क्षणों में हैं, उस समय भी अगर आप अपने आपको संभाल लेते हैं, यानि सामान्य ही रहते हैं, तो आप मधुर व्यक्ति माने जाओगे।

लेकिन जिस समय आपके ऊपर तनाव की स्थिति आती है, अगर उस समय आप मीठा बोल पाएं तो यह है असली कसौटी। भगवान श्री कृष्ण के सम्बन्ध में ऋषि वेदव्यास ने लिखा। चार गुणों से युक्त एक शोभा भगवान श्रीकृष्ण के मुख में दिखाई देती है। मुस्कान, माधुर्य, माथे की शीतलता और कर्मो का जोश, स्फूर्ति।

वेदव्यास जी आगे लिखते हैं कि जब विपरीत स्थिति आती है, दु:ख के तूफान सामने दिखाई देते हैं तो ये चारों गुण उस समय और भी अधिक शोभायमान हो जाते हैं। जब तूफान होता है, दु:ख की पीड़ा की घड़ी होती है, तो भगवान और भी अधिक मुस्कुराते हैं। यही उनका सन्देश है, सबके लिए। कितनी भी बुरी स्थिति हो, दु:ख की घड़ी हो, लेकिन अपनी मुस्कुराहट नहीं छोड़ना। अपनी वाणी की मधुरता नहीं छोड़ना, अपने माथे की शीतलता का परित्याग, अपने अन्दर की स्फूर्ति को, उत्साह को मरने मत देना। दु:ख आये तो उल्टा मत हो जाइये। इस युग में जीने वाले लोग आता है दु:ख तो वाणी कड़वी हो जाती है, चेहरा उदास, माथा गर्म, हाथ-पाँव ठण्डे। एकदम उल्टा चलता है व्यवहार! इसलिए हम व्यवहार में असफल हैं, सफल नहीं हैं।

सफल होने का तरीका यही है कि कड़वी बातें सुनकर भी अपने आपको गर्म मत करें, अपने चेहरे पर प्रसन्नता बनायें रखें। देखें अगर कहीं सत्संग है तो हजार-लाख काम छोड़कर भी तैयार हो जायें। दान करने का मन है तो फिर तोलकर हिसाब न लगायें। जो हाथ में है, बस उसी समय तत्पर हो जाएं। कुछ दुनियाँ में ऐसे भी लोग हैं, जिनकी अपनी विशेषता है।

कभी दो घड़ी बैठकर उस परमपिता का धन्यवाद करें कि हे प्रभु! तेरी अनन्त-2 कृपा है। तूने कितना-2 दिया, तूँ तो देता ही जाता है, लेकिन मैं तेरे दिये को संभालने वाला हूँ ही नहीं, मैं तो खोता जा रहा हूँ। जो अपने श्री सतगुरु देव को, सन्त महापुरुषों को, बड़े बुजुर्गो को प्रसन्न करना जानते हैं, समझना उनके पास स्वर्ग है। महान् पुरुषों की सेवा जरूर करनी चाहिए। महान् पुरुषों के सान्निधय में बैठना चाहिए। ज्ञानीजनों का संग कीजिए। जिनके सान्निधय में बैठने से आपके जीवन में निखार आये, आपकी परेशानियाँ दूर हो। तभी कहा है कि सतगुरु देव जी की शरण में आयें। सेवा, सिमरण, सत्संग से अपने जीवन को ऊँचा उठायें और आनन्द ही आनन्द से अपने जीवन के हर पल को निखारें। – जय गुरुदेव

पिया ने भेजी वणिज को, गई नगरिया भूल।
जा पहुँची वा देश में ब्याज मिले न मूल ।।

❁❁❁

चलना भला न कोशका, दुहिता भलीन एक।
कर्जा भला न बाप का, जो प्रभु राखे टेक।।

गुरु ज्ञान सिखाते हैं

मन को कभी न मारना, मन का कांटा मोड़।
अनुभव बिछड़ा आप से, अपने आप में जोड़।।

महापुरूष कहते हैं कि हे इन्सान! मन को मारना नहीं है, मन का कांटा बदलना है। जैसे चलती रेल का कांटा बदलने से रेल एक लाईन से दूसरी लाईन पर चली जाती है। इसी तरह मन को भी मारना नहीं है, केवल इसे मोड़ना ही है। मन को अमन करना अर्थात् मन को अपने नियन्त्रण में करना है। जिस समय अर्जुन भगवान से अपने कल्याण के लिए प्रार्थना कर रहा था तो भगवान ने कहा– ''यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो अपने मन को अमन करो।'' लेकिन अर्जुन ने कहा कि मन को अमन करना मेरे लिए बहुत मुश्किल है। यदि आप कहें तो समुन्द्र की लहरें रोक सकता हूँ, पवन का वेग रोक सकता हूँ, लेकिन मन को रोकने में असमर्थ हूँ। आप ही मुझ पर कृपा करें तो यह रूक सकता है, अन्यथा नहीं। तब भगवान श्री कृष्ण ने कहा– ''मन को अमन करने का उपाय है अभ्यास और वह भी वैराग्य सहित। केवल बाहरी जाप से मन अमन नहीं होगा। जैसे कहा है –

बंबी कूटे बांवरे साँप ना मारिया जाये।

अर्थात् साँप तो बिल के अन्दर ही रहता है, बाहर बिल के ऊपर डंडे मारने से साँप नहीं मरेगा। वह तभी मर सकता है, जब कोई बारीक यानि सूक्ष्म औजार लेकर बिल के भीतर चोट करें। ठीक इसी प्रकार मन रूपी साँप तो शरीर रूपी बिल के अन्दर रहता है और हम बर्हिमुख नाम जपते हैं, इससे मन को शान्ति नहीं मिल सकती। इसलिए हमें चाहिए अभ्यन्तर अजपा-जाप का मन से अभ्यास करें, जिससे परमशान्ति की प्राप्ति हो। अजपा-जाप जो श्वास प्रति श्वास मन से निरन्तर होता रहता है। उस अभ्यास को करने से मन इधर-उधर नहीं जाता और स्थिर हो जाता है। जैसे कोयले को अनन्त बार जल से धोयें, उसकी कालिख दूर नहीं हो सकती, परन्तु जिस अग्नि से कोयला बिछड़ा हुआ है, जब उसी में प्रवेश कराया जाता है, तब लाल हो जाता है। पुनः उसकी राख भी सफेद हो जाती है अर्थात् कालिख दूर हो जाती है। वैसे ही कोयले के सदृश मन भी मैला है। अनेक प्रकार के साधनों से यह शुद्ध नहीं होता। जब सतगुरु की प्राप्ति होती है और वे उपदेश करके भेद बताते हैं, ''हे मन! तूँ यहाँ से बिछुड़ा है, उसी में मिलने पर तेरी अशुद्धता दूर होगी।'' और ज्ञान द्वारा अभेद करते हैं, तो वह शुद्ध हो जात है।

साध्वी पुरुषार्थां नन्द जी

गफलत ना कर बावरे,
तुझमें हीरे लाल ।
भेदी गुरु को ढूंढ ले,
हो जायें मालोमाल ।।

महापुरुष कहते हैं कि तुम्हारे अन्दर हीरे लाल हैं, लेकिन समझ के कारण तुम दुःखी हो रहे हो। जैसे सोना और मिट्टी मिले हुए हों। जब तक उसका पता ना हो, तब तक कंगाली दूर नहीं होती। परन्तु जब दोनों के भेद का ज्ञान हो जाए तो कंगाली दूर हो जाती है। वैसे ही हमें सोने के समान आत्मा व मिट्टीवत देह प्राप्त है। जब तक जिज्ञासु को इसका ज्ञान नहीं होता, तब तक वह दीन हीन बना रहता है। परन्तु जब सतगुरु द्वारा श्रवण करता है और फिर विवेक करके आत्मा को भिन्न समझता है तो उसकी कंगाली दूर हो जाती है। जैसे दूध की प्रत्येक बूंद में घी मौजूद होता है, परन्तु मंथन किए बिना नहीं निकल सकता और न ही घी

खाने का सुख प्राप्त हो सकता है। जैसे तिलों में तेल तो है, परन्तु जब तक उन्हें पेर कर तेल अलग नहीं किया जाता, तब तक उसका सुख नहीं मिल सकता। इसी तरह आत्मा भी जर्रे-2 में पूर्ण है, परन्तु विवेक के बिना जन्म-मरण रूपी दु:ख की निवृति नहीं हो सकती। जब विवेक द्वारा आत्मा का अनुभव हो जाता है, तो होती है दु:खों की निवृति एवं आत्मानन्द की प्राप्ति। परन्तु विवेक आत्म ज्ञान सतगुरु के बिना नहीं हो सकता और बिन आत्मज्ञान के मनुष्य जन्म व्यर्थ चला जाता है। संसार में सबसे श्रेष्ठ आत्म ज्ञान है, जो इसकी प्राप्ति कर लेता है, उसका जन्म सफल हो जाता है। परन्तु आत्मज्ञान मिलता है तत्व वेता ब्रह्मनिष्ठ सतगुरु की शरण में जाने से। सन्तों के पास किस भाव से जाना चाहिए, गीता में भगवान श्री कृष्ण ने स्पष्ट किया है कि सन्तों महात्माओं के पास श्रद्धापूर्वक नम्रता से साष्टांग दण्डवत् प्रणाम कर, शुद्ध भाव से सेवा कर, अपने कल्याण के लिए प्रश्न करना चाहिए। पवित्र श्रद्धाभाव को देखकर ही ज्ञानी महात्मा तत्व वस्तु का उपदेश करते हैं। अवतारों ने भी गुरु की महिमा की है। श्री राम, तीनों लोकों के स्वामी होते हुए भी गुरु के आगे नतमस्तक हुए। भगवान श्री कृष्ण और रूक्मणी दोनों अपने गुरुदेव दुर्वासा ऋषि को रथ में बैठाकर रथ में खींचते थे। अर्थात् अवतारों ने भी सेवा की। अत: गुरु की शरण में जाने से ही ज्ञान होता है और ज्ञान हो गया तो समझों कल्याण हो गया।

जय गुरुदेव
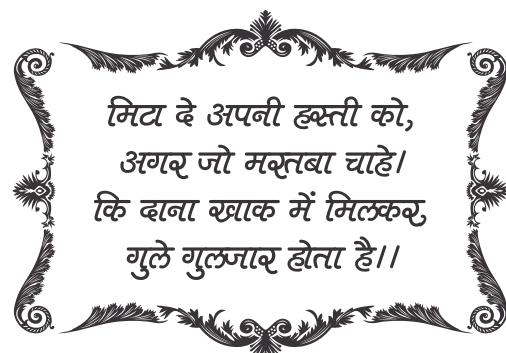
प्रश्नोतरी

प्रश्न – सबसे बड़ा सुख क्या है ?
उत्तर – शान्ति ही सबसे बड़ा सुख है।

प्रश्न – परमात्म से भी ऊँचा दर्जा किसका है?
उत्तर – सतगुरुदेव का सबसे ऊँचा दर्जा है।

प्रश्न – वायु से भी तेज चलने वाला कौन है?
उत्तर – मन की गति, वायु से भी तेज चलने वाली है।

प्रश्न – ऐसी कौन सी चीज है, जो इन्सान को अन्दर ही अन्दर खाती है ?
उत्तर – चिन्ता ही इन्सान को दिन–रात खाती रहती है।

प्रश्न – सब तीर्थों का निवास कहाँ होता है ?
उत्तर – गुरुदेव के चरणों में सब तीर्थों का वास होता है।

प्रश्न – भगवान का निवास स्थान कहाँ है?
उत्तर – भक्तों के हृदय में भगवान का वास है।

प्रश्न – मनुष्य का साथ कौन देता है ?
उत्तर – धैर्य, सहनशक्ति मनुष्य के सबसे बड़े साथी होते हैं।

प्रश्न – किसके छूट जाने से मनुष्य महान बनता है?
उत्तर – क्रोध और अहंकार छूट जाने पर मनुष्य महान और प्रिय बनता है।

प्रश्न – क्या इन्सान अपना भाग्य बदल सकता है?
उत्तर – अपने कर्मो के द्वारा और गुरुदेव के आर्शीवाद से इन्सान का भाग्य बदल सकता है।

प्रश्न – दान करते समय नजरें नीची क्यों रखें ?
उत्तर – दान करते समय अपनी नजरें नीची रखें, ताकि दान लेने वाले का मन न मलिन हो और दान देने वाले के मन में अहंकार न आ जाए।

Happy Marriage Anniversary

आशीर्वाद गुरूदेव का, इक-दूजे का करते रहें सम्मान।
इस जोड़ी के होठों पर हो, फूलों-सी मुस्कान।।

श्री मुकेश भाटिया व श्रीमती विजय भाटिया
14 अप्रैल

श्री भगवान दास बत्रा व श्रीमती प्रेम बत्रा
13 अप्रैल

श्री सतीश भाटिया व श्रीमती सुमन भाटिया
29 अप्रैल

खुशियों भरी जिन्दगी गुजरान करें हम दम ।
आप के जीवन में कभी भी ना आये कोई गम ।।

हर में हरि का वास है ....

मंदिर तोड़, मस्जिद तोड़ क्योंकि
इसे इन्सान बनाता है ।
मगर किसी का दिल मत तोड़ क्योंकि
इसे भगवान बनाता है ।।

अगर हमने किसी के दिल को दु:खा दिया तो समझो परमात्मा को नाराज कर दिया और यदि एक भी मन की प्रसन्नता ले ली तो समझो परमपिता परमात्मा की प्रसन्नता प्राप्त कर ली।

सम्राट अशोक के राज्य में एक बार अकाल पड़ गया। उन्होंने अपने अनाज के गोदाम खुलवा दिये और लोगों को अन्न दान करने लगे। कर्मचारियों की ड्यूटी लगा दी अनाज बाँटने की। एक दिन सम्राट के मन में आया, इतना बड़ा यज्ञ हो रहा है, मुझे भी अपने हाथों से आहूति डालनी चाहिए। सामग्री तो भिजवा दी, परन्तु अपने हाथों से आहुति नहीं दी।

सम्राट अशोक चल पड़े। सब जगह निरीक्षण करने के बाद एक गाँव में पहुँचे। काफी देर हो चुकी थी। कर्मचारी सामान समेट कर जाने के लिए तैयार थे। उसी समय एक बूढ़ा हाँफता हुआ आया और कहने लगा कि बहुत दूर से आया हूँ। मेरे घर में बच्चे भूखे हैं, थोड़ा अनाज चाहिए। कर्मचारियों ने कहा कि अब तो बंद हो गया है, कल ले जाना। दूर से ही सम्राट ने इशारा कर दिया। बाबा से कहा कि बाँध लो, जितना बाँध सकते हो। बूढ़े बाबा ने अपनी शक्ति से चौगुना अनाज बाँध लिया कि पता नहीं, कल कहीं खत्म न हो जाये। उठाने लगे तो उससे उठाया नहीं गया। सम्राट अशोक ने कर्मचारियों से दुकान बन्द करके जाने को कहा। फिर वे स्वयं बूढ़े बाबा के पास चलकर आये और अनाज की गठरी सिर पर रख ली। कहने लगे, मैं भी तो वहीं आपके पास में रहता हूँ, चलिए आपका समान लिए चलता हूँ।

साध्वी सर्वयोगा नन्द जी

बूढ़ा हाँफता हुआ तेजी से आगे चलता जा रहा है और पीछे-2 सम्राट अशोक चल रहे हैं। मार्ग में कई लोगों ने सम्राट से गठरी लेनी चाही, परन्तु उन्होंने इशारे से मना कर दिया। सम्राट अशोक को आन्तरिक प्रसन्नता मिल रही है। बूढ़े बाबा ने अपने घर में गठरी रखवाई और बोला, ''बेटा! तूँ बहुत अच्छा है। मैं तुम्हें भरपूर आर्शीवाद देना चाहता हूँ।'' दीया लेकर आया। महाराज के चेहरे को ध्यान से देखा। आश्चर्य से बोला कि आपकी शक्ल तो हमारे सम्राट से मिलती है। तभी क्या देखता है कि बाहर सिपाही खड़े हैं। सम्राट को पहचानकर वह रोने लगा, ''हे अन्नदाता! आप मेरे घर आये हो, अन्न लेकर आये हो।''

सम्राट अशोक ने हाथ जोड़कर कहा, ''इस काया को पवित्र करने का मौका मिला है आज। इसे पवित्र करना चाहता हूँ। अपना कर्तव्य निभा रहा हूँ। आपका मजदूर बेटा बनकर आया हूँ। कभी कोई दिक्कत हो तो मेरे पास चले आना।'' जैसे ही सम्राट अशोक जाने लगे तो बूढ़े बाबा ने आवाज देकर कहा, ''आज मुझे पता लगा कि आप बाहर से ही राज नहीं करते, दिलों पर भी राज करते हो।'' याद रखना, यह सेवा जो व्यक्ति के हृदय पर राज करने का अवसर देती है, वही यह परमात्मा के दरबार में भी राज करने का अधिकार दिया करती है। इससे बड़ी राजशक्ति दुनियाँ में कोई नहीं है। कहा है-

तुलसी इस संसार में, सबसे मिलिये धाए।
ना जाने किस रुप में, नारायण मिल जाए।।

नर ही नारायण का रुप है। नर सेवा, नारायण सेवा। जरुरी

नहीं कि हम शिवलिंग पर दूध चढ़ायेंगे तो परमात्मा प्रसन्न होंगे, नहीं किसी बीमार दुखिया को अगर दूध पिला दें, तो भगवान के प्रसन्न होते देर न लगेगी। इन्सान को दुत्कार कर भगवान को प्रसन्न नहीं कर पाएगा। इसलिए हर जीव से प्रेम से मिलता चल परमात्मा तुझसे दूर नहीं है।

– जय गुरुदेव

एक बार एक व्यक्ति अपने बीमार बच्चे के लिए फल खरीदने के लिए आया था। फलों के बढ़े हुए दाम सुनकर मन ही मन सोच रहा था, ''क्या लूं और क्या न लूं? लूं भी कुछ या न लूं? लेना तो पड़ेगा बच्चे के लिए। कितनी महँगाई हो गई है? फलों के दाम भी कहाँ से कहाँ पहुँच गये हैं ?

तभी एक अमीर औरत कार से उतरी। उसने बिना दाम पूछे बढ़िया सेब और बढ़िया केले खरीदे और पाँच सौ रूपये का नोट निकाल कर दुकानदार को पकड़ा दिया। जब उसने कुछ रूपये वापिस लिये तो उस औरत के मुँह से निकला, फ्रूट तो सस्ता ही चल रहा है?''

यह सुनकर उस व्यक्ति ने जब उस औरत की तरफ देखा तो उसे लगा कि महंगाई नहीं बढ़ी है, सिर्फ उसी के पास रूपये नहीं है। जिसके पास रूपये हैं, उसके लिए कोई महंगाई नहीं है।

जय गुरुदेव

जय गुरुदेव

जय गुरुदेव

जय गुरुदेव

विशेष सूचना

गुरु पूर्णिमा का महापर्व

दिनॉक 22 जुलाई 2013 को

हर आश्रम में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा।

यह पूर्णिमा महापर्व 22 जुलाई 2013 को श्री गुरु महाराज जी के प्रत्येक आश्रम में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। आप सभी इस शुभ अवसर पर गुरुदेव के सानिध्य में पहुँचकर आनन्द प्राप्त करें। हो सके तो इस दिन जितना समय सिमरण, सेवा, सत्संग में व्यतीत करें एवम् सतगुरु देव जी की चरण शरण में रहकर उनके आर्शीवाद के पात्र बनें।

गुरु पूर्णिमा के दिन जो शिष्य संयम, श्रद्धा व भक्ति से ब्रह्मवेता सतगुरु का पूजन करता है, उसे वर्ष भर के पर्व मनाने का फल मिलता है। तीर्थ यात्रा एवं गंगा स्नान से भी कई गुणा अधिक फल की प्राप्ति होती हैं।

यह शुभ घड़ी 22 जुलाई 2013 को हर्दिक शुभकामनायें देती हुई आ रही है। इस महापर्व पर साक्षात सतगुरु देव जी को मनायें। उनका धन्यवाद करें और उनके आर्शीवाद से झोलियाँ भर–2 जायें और जीवन को सेवा सिमरण, सत्संग द्वारा सुन्दर–2 सजायें।

गुरु पूजा कैसे मनायें

1. गुरु पूजा से पहले अपने घर के मन्दिर की अच्छी तरह सफाई करें।
2. इस दिन प्रातः स्वयं तन–मन से शुद्ध होकर अपने मन्दिर में गुरुमूर्त को इश्नान कराएं एवं वस्त्र जरुर बदलें।
3. श्रद्धाभाव से नमनकर चन्दन–तिलक करें, ध्यान एवं आरती पूजा करें एवम् अपने हृदय के उद्‌गारों को भाव सहित प्रकट करें।
4. घर में हल्वा या खीर बनाकर भोग अवश्य लगायें।
5. यदि गुरुघर आपके पास हो तो वहाँ जाकर साक्षात् गुरुदेव के चरणों की पूजा जरूर करें। तिलक, चावल, फूल एवं नारियल की भेंट चढ़ायें। यदि आपकी सामर्थ्य हो तो गुरुदेव को वस्त्र अवश्य भेंट चढ़ायें।

इस दिन जितना हो सकें, अधिक से अधिक समय गुरुदेव के सानिध्य में उनकी सेवा में लगाएं। अपने भावों को अपनी सेवा के माध्यम से उनके समक्ष प्रगट करें।

आँखों देखी

श्री मद् भागवत कथा (द्वारिकापुरी)

श्री श्री 1008 श्री योगशब्दानन्द महाराज जी एवम् श्री श्री 1008 श्री स्वामी अनुभवानन्द महाराज जी की असीम कृपा से एवं श्री सन्त सुखदेवानन्द महाराज जी के आर्शीवाद से श्री द्वारकाधाम में श्री मद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का अनूठा आनन्द बरसा। संगते ट्रेन द्वारा, हवाई जहाज द्वारा जब द्वारकाधाम पहुँची तो सभी संगतें इतनी आनन्दित हो रही थी कि किस तरह इस अनूठे आनन्द का वर्णन करें।

4 जनवरी 2013, सायँ 4 बजे कलश यात्रा का शुभारम्भ श्री महाराज जी के आर्शीवाद से हुआ। श्री श्यामसुन्दर असीजा जी ने कलश यात्रा को हरी झंडी दिखाकर जब रवाना किया, उस समय सर्व संगतें झूम उठी। श्री महाराज जी सुन्दर सुसज्जित चाँदी के रथ पर जब विराजमान हुए इतने शोभायमान लग रहे थे कि उस समय ऐसा अनुभव हो रहा था कि सभी देवी-देवता भी इस दृश्य का आनन्द लेने आये हुए हैं और फूलों की अपार वर्षा होने लगी और सर्व संगत गोपियों की तरह दीवानी, मस्तानी, अपने आप को भूले हुए बस एक कन्हैया के प्रेम में झूमती हुई नजर आ रही थी। श्री द्वारिकाधाम (गुजरात) की हर गली जहाँ से कलश यात्रा निकली, वह परम आदरणीय श्री महाराज जी के रथ के साथ-2 ऐसे अनुभव हो रहा था कि द्वारिकाधीश भगवान स्वयं हमारे साथ-2 चल रहे हों और दूर-2 तक ट्रैफिक जाम की स्थिति बन गई थी। लगभग 900 गुरुमुख देश के विभिन्न कोनों से पहुँचे हुये थे। कलश यात्रा के बाद एक सुन्दर सुअवसर का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सचमुच द्वारकाधीश भगवान ने हमारे श्री महाराज जी पर अनन्त कृपा की कि हम सब को यह झण्डा रस्म सौभाग्य प्राप्त हुआ। 3-3 साल इन्तजार करना पड़ता है यात्रियों को, इस सुअवसर को प्राप्त करने का और हम सबको श्री महाराज जी के आर्शीवाद से यह सुअवसर 5 जनवरी को मिला। कलश यात्रा के बाद ध्वजारोहण श्री सुभाष चोपड़ा फतेहाबाद द्वारा किया गया और श्री मद्भागवत कथा के शुभारम्भ से पहले दीप प्रज्जवलित श्री राजेश कथूरिया (टिंकू) फतेहाबाद ने किया। और फिर विधिवत् रूप से श्री मद्भागवत कथा का शुभारम्भ हुआ। और प्रतिदिन प्रातः 7 से 8 बजे तक सत्संग व आरती और फिर संगतें घूमने का आनन्द लेती और सायं 4 से 7 बजे तक श्री मद्भागवत कथा श्री महाराज जी एवं सन्त सर्वयोगानन्द जी नित नये प्रसंगों द्वारा, विशाल झांकियों सहित किया करते और सर्व सन्त मण्डली भी श्री मद्भागवत कथा का आनन्द ले भी ले रहे थे और सर्व संगतों को इस महानगरी श्री द्वारिकापुरी में आनन्दित भी कर रहे थे। यह आनन्द बताया नहीं जाता, अनुभव किया जाता है।

जिस तरह कन्हैया छोटी से छोटी सेवा को स्वयं करते। इसी तरह महात्मा विश्वासपुरी जी ने लंगर सेवा को इस तरह संभाला कि क्या और कितने कहें..... बड़े दिल से, बड़े भाव से, बड़े प्रेम से संगतों को लंगर खिलाया। हर दिल महात्मा विश्वासपुरी पे मेहरबान था।

5 जनवरी झण्डा रस्म के लिए श्री गुरुमहाराज जी एवं स्वामी जी महाराज की असीम कृपा से एवम् श्री महाराज जी के आर्शीवाद से सन्त सर्वयोगानन्द जी एवम् सर्व सन्त मण्डली एवं सर्व संगत खूब जयकारे लगाते हुए कथा स्थल से मन्दिर तक द्वारिकाधीश भगवान के जयकारे लगाते हुए मन्दिर तक पहुँचे और यह अपने आप में सुखद अहसास था। वहाँ सभी ने झण्डा रस्म का नजारा देखा। यह सब कार्यक्रम वहाँ के पण्डित तुशाल जी की मेहनत का फल था। जिनकी अपार मेहनत से संगतों को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह भी एक अति उत्तम नजारा था। जब श्री द्वारिकाधीश भगवान को झण्डे की रस्म पगड़ी पहनाई जा रही थी तो उस समय सभी संगतों को श्री स्वामी जी महाराज जी के भी दर्शन हुए और सभी

देवी-देवताओं की तरह श्री स्वामी जी महाराज जी का भी सभी संगतों ने आर्शीवाद लिया। संगतें काफी समय तक टक-टकी लगाये श्री स्वामी जी महाराज जी को देखती ही रही।

4 तारीख को श्री महाराज जी ने अपने मुखारविन्द से श्री मद्‌भागवत कथा का शुभारम्भ किया। प्रथम दिन श्री महाराज जी ने राजा परीक्षित के बारे में बताया। दूसरे दिन का प्रसंग ध्रुव का रहा, जिसमें श्री महाराज जी ने अपने बच्चों को उचित शिक्षा देने के बारे में बताया, जैसे की सुनीति ने ध्रुव को दी।

सातों दिन श्री महाराज जी ने श्री मद्‌भागवत कथा का झांकियों सहित विवरण किया। सातवें दिन राजा परीक्षित की मुक्ति हुई तथा हवन यज्ञ द्वारा श्री मद्‌भागवत कथा की समाप्ति हुई। इन सात दिनों में यात्रिक निवास यहाँ श्री मद्‌भागवत कथा हो रही थी, स्वयं में द्वारिका बनी हुई थी। सातों दिन सायं देश के भिन्न-2 भागों से मुख्य यजमानों द्वारा ज्योति प्रज्जवलित हुई। जब भी दीप प्रज्जवलित किया जाता तो उस समय नजारा देखने वाला होता था।

श्री गुरु महाराज जी की छत्रछाया में संगतों को घुमाने के लिए विशेष रूप से इन्तजाम किये गये थे, रोजाना बहन (पिंकी गाबा जी हाँसी) द्वारा दो बसे लोकल द्वारकाधीश जिसमें बेर द्वारिका, सुदामा मन्दिर, रुक्मणी मन्दिर, गोपी तालाब, गोमती नदी, द्वारिका के समीप समुन्द्र का नजारा दिखाया गया और दूसरी बस श्री सोमनाथ मन्दिर के लिए भेजी जाती। जहाँ संगतों ने शिवलिंग के दर्शन किये, गीता मन्दिर, पोरबन्दर में राष्ट्रपिता महात्मागाँधी का जन्म सीान और सुदामा मन्दिर देखा। सात दिनों में सभी संगतों ने खूब आनन्द लिया। सुबह, दोपहर, रात को लंगर का बहुत आनन्द आता। तीनों समय घर से भी अच्छा व स्वादिष्ट लंगर खाकर मन तृप्त हो जाता और संगतें अपने-2 होटलों के कमरों में जाकर आराम करती और सुबह सही समय पर आरती पूजा व कथा का आनन्द लेती।

सभी संगतों ने ''श्री द्वारकाधाम'' की यात्रा एवं श्री मद्‌भागवत कथा की निर्विघ्न समाप्ति होने पर बधाई दी एवम्‌ भविष्य में भी ऐसी कृपा करते रहने के लिए श्री चरणों में प्रार्थना की और 10 जनवरी रात्रि 10 बजे संगतें श्री महाराज जी के साथ जय-जयकार करती हुई अपने-2 शहरों की और प्रस्थान किया और श्री महाराज जी का आर्शीवाद पाकर सभी संगतें आनन्द ही आनन्द का अनुभव करती हुई अपने घरों में पहुँची।

आँखों देखी

श्री मद् भागवत कथा (पातरां)

श्री गुरुमहाराज जी एवम् श्री स्वामी जी महाराज जी की असीम कृपा से एवं श्री महाराज जी के आर्शीवाद से दिनांक 18 फरवरी से 24 फरवरी तक श्री मद्भागवत कथा ज्ञान-यज्ञ पातड़ां (पंजाब) में श्री धर्मशाला विकास कालोनी में हुआ। इस पावन कथा का आयोजन श्री साधुराम बंसल व श्रीमती किरण बंसल के सपरिवार के सहयोग से पातड़ा (पंजाब) वालों को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ।

कलश यात्रा 18 फरवरी सायं 3 बजे सोह्मम् आश्रम नरवाना रोड से प्रारम्भ होकर श्री धर्मशाला पहुँची। श्री साधुराम जी ने हरी झण्डी दिखाकर कलश यात्रा का शुभारम्भ किया। श्री महाराज जी एवं सन्त सर्वयोगानन्द जी रथ में बैठे ऐसे शोभायमान लग रहे थे कि सचमुच हमारे प्रभु फूलों की पालकी में सुन्दर सज रहे हों। श्री महाराज जी की यह भव्य झाँकी के साथ पातड़ां, टोहाना, बुढ़लाडा से भी पहुँचकर सर्वसंगतें खूब जयकारे लगाते हुये श्री धर्मशाला में पहुँचे। जयकारों और कीर्तन से पातड़ाँ शहर वृन्दावन लग रहा था। बड़ा ही अनूठा आनन्द बरसा।

भक्त श्री साधुराम जी जब द्वारिकापुरी गये, तब वहीं उनके मन में यह भाव बना और आज श्री महाराज जी ने कितनी जल्दी उन पर व उनके परिवार पर एवं पातड़ाँ शहर पर अनन्त कृपा कर दी। उनके इस भाव से सारे पातड़ाँ निवासियों ने खूब आनन्द लिया। इतनी अनन्त कृपा सतगुरु देव जी ने उनके परिवार पर की कैसे, इस अनूठी दात का वर्णन करें.....

18 फरवरी से 24 फरवरी तक पातड़ां निवासियों को पहली बार यह सौभाग्य प्राप्त हुआ ''श्री मद्भागवत कथा'' का। सचमुच पातड़ां वालों की श्रद्धा निराली। सातों दिन उन्होंने इतनी सेवा भाव, प्रेम, श्रद्धा और कितना कहें..... ऐसा भाव उनका सदैव बना रहे।

प्रतिदिन सायँ 3 बजे से 7 बजे तक सन्त सुखदेवानन्द महाराज जी एवं सन्त सर्वयोगानन्द जी ने नित नये प्रसंगों द्वारा झांकियों सहित ज्ञान वर्षा द्वारा संगतों को आनन्दित करते रहे। सात दिनों के इस ज्ञान यज्ञ का पातड़ां निवासियों, टोहाना, बुढ़लाडा, फतेहाबाद की संगतों ने भी विशेष आनन्द लिया और पातड़ां निवासियों को सितम्बर महीने में बहुत जल्दी यह सौभाग्य फिर प्राप्त होगा। इतनी अपार कृपा बरसायी श्री गुरु महाराज जी ने ......

जब श्री महाराज जी एवम् सन्त सर्वयोगानन्द जी कथा सम्पन्न करके चलने लगे, उस समय पातड़ां निवासी व सभी संगतों की आँखों में प्रेमाश्रुओं की गंगा बहने लगी और सभी उदास और उस समय ऐसा लग रहा था कि जिस तरह श्री राम भगवान जब अयोध्या से जाने लगे। सभी अयोध्यावासी श्री राम भगवान के साथ-2 चलने को तैयार हो गये। इसी तरह पातड़ां निवासी भी इतनी लम्बी-2 कतारें बना ली और कहने लगे कि हमें यूँ उदास मत छोड़ जाओ। हमें भी अपने संग ले चलो। उनका यह प्रेम-भाव देखकर श्री महाराज जी का हृदय गद्गद् हो गया और श्री महाराज जी ने उन्हें इतना आर्शीवाद दिया और अनन्त कृपा भी की कि शीघ्र ही सितम्बर महीने में हम आपके पास आयेंगे और तब तक आप सब इसी तरह भाव, प्रेम बनायें रखें और आप सब पर यूँ ही कृपा बरसती रहेगी।

त्याग में सुख .....

'' ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर...''

मनुष्य के मस्तिष्क में संसार की स्मृतियों की और संसार के लोगों की भीड़ है, जो उसको एकांत में भी शान्ति से बैठने नहीं देती। दुनियाँ की बातें हैं, दुनियाँ की आवाजें हैं, दुनियाँ की कड़वी और मीठी स्मृतियाँ हैं। एकांत में जब भी आप बैठोगे, वह सब आपको याद आयेगा और आपको परेशान करेगा, किसी की बात को याद करके हंसोगे, किसी की बात को याद करके जलोगे, किसी की बात को याद करके संग पैदा होता है और जैसे ही उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, तो ध्यान आयेगा। किसी की बात को याद करके आसक्ति जागेगी। यह आसक्ति का संसार है। जो भी बात हो, अगर आप उसे वहीं का वहीं छोड़ दें तो बात खत्म हो जाती है और अगर उस पर दबाव डालना शुरू कर दिया तो प्रभाव मस्तिष्क पर होता चला जायेगा और विचित्र बात तो यह है किसी ने अगर आपको कुछ कह दिया और वही बात आपके मन पर असर कर गई और मन उसे बार–2 दोहरा रहा है। अगर हम हर बात को कुरेदते रहें और गहरा करते रहें तो समझो हम नर्क की अग्नि में हर समय जल रहे हैं। यह आसक्ति का संसार है।

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि इससे बाहर निकलो, अनासक्त होकर चलो, कर्म करने का अधिकार तुम्हारा है, कर्म करते चले जाओ। लेकिन संसार के फल की तरफ, कर्मो के फल की तरफ से चिंता हटा दो। ऐसा मत सोचो कि ''मैं यह करने लगा हूं, क्या लाभ होगा ?'' हम व्यापारी की तरह उसका तुरन्त लाभ पाना चाहते हैं। उसी समय कामना करने लग जाते हैं, साधना में बैठेंगे तो क्या लाभ होगा? भक्ति करेंगे तो क्या लाभ होगा? सत्संग में जायेंगे तो क्या लाभ होगा? यहाँ हर समय आदमी कुछ न कुछ कामना कर रहा है और लाभ न हो तो मन टूटता है। तभी कहा है कि इस आसक्ति के संसार में निरंतर मनुष्य द्वंद में फंसता है।

चलती चाकी देखकर दिया कबीरा रोये ।
दो पाटन के बीच में बाकी बचा ना कोये ।।

साध्वी ब्रह्म योगानन्द जी

संसार का आनन्द अगर लेना चाहते हो तो एक किनारे बैठकर के लो, इसमें जितना–2 उलझते जाओगे, उतने ही फंसते जाओगे। फिर पंख फंस जायेंगे, फिर उड़ान नहीं हो पायेगी और उसी में उलझकर के जिन्दगी खत्म हो जायेगी। जैसे शहद के लिए कोई मक्खी दौड़ रही है या कोई मधुमक्खी जाकर हलवाई की चाश्नी पर बैठ जाये, हलवाई ने कड़ाहे में चाशनी बनाई है, मक्खी जाकर बैठ गई, किनारे बैठकर स्वाद लेने लगी, स्वाद लेते–2 आसक्ति और अधिक आगे बढ़ने लगी कि थोड़ा और आगे जाकर स्वाद लूं, थोड़ा और आगे जाऊं, थोड़ा और आगे जाऊँ। जब तक किनारे पर बैठकर स्वाद ले रही थी, तब तक वह सुरक्षित थी लेकिन जैसे ही आगे बढ़ी और का लालच जागा। अब स्थिति यह हो गई कि पंख चाशनी में चिपक गये, अब बाहर निकलना चाहती है, अब वह कहती है मुझे नहीं खाना। लेकिन मुझे छोड़ो तो सही, स्वाद दे रही थी, वही चीज, अब फंदा बन गई, मुसीबत बन गई और उसका परिणाम यह हुआ कि चाशनी में पंख लिपट जाने से वह उड़ न सकी, फंसकर वहीं उसकी मौत हो गई।

इसलिए संसार में उलझना–फंसना या आसक्त नहीं, विरक्त होकर संसार का सुख लेना और आगे बढ़ना चाहिए, तभी जीवन की सार्थकता है।

–जय गुरुदेव

विशेष स्नेह निमन्त्रण

फलक पर चाँद होगा सितारे झिलमलायेंगें
देवी - देवता भी आसमाँ से फूल बरसायेंगे।
सन्तों की वाणी और गुरुओं का ज्ञान,
श्री योग जी के जन्म दिवस पर, सबका भाग्य बनायेंगे।

श्री श्री 1008 श्री योग शब्दानन्द जी महाराज जी का जन्म शताब्दी समारोह

चंदा की चाँदनी में तारे झिलमिलायेंगे
देवी देवता भी आसमां से फूल बरसायेंगे
होगा उत्साह सब प्रेमियों के दिलों में
जब श्री योग जी की जन्म शताब्दी खुशियों से मनायेंगे

श्री श्री 1008 श्री योग शब्दानन्द जी महाराज जी के 100 वें जन्म दिवस पर
कुटिया शान्त सरोवर, टोहाना में
श्री योग जन्म शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है।
इस शुभ अवसर पर पहुँचकर अपने जीवन को सफल बनायें।

जय श्री कृष्ण | जय गुरुदेव | जय श्री राधे

धर्म अनुरागी साध संगत जी,
श्री श्री 1008 श्री योगशब्दानन्द जी महाराज एवं श्री श्री 1008 स्वामी अनुभवानन्द जी महाराज एवं
सन्त सुखदेवानन्द महाराज जी के आर्शीवाद से

28 मई से 3 जून 2013 तक

परमहंस श्री योग दरबार – ब्रह्म ज्ञान मन्दिर, (नांगलोई)
में "**श्री मद्‌भागवत महापुराण कथा**" होनी सुनिश्चित हुई है।
आप सभी प्रेमी जन इस धार्मिक अवसर पर पहुँचकर
जीवन में लाभ उठायें

राम नाम की महिमा

साध्वी ध्यान योगानन्द जी

राम एक तापस तिय तारी ।
नाम कोटि खल कुमति सुधारी ।।

स्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि प्रभु श्री राम के प्रताप से एक तपस्वी की पत्नी अहिल्या का उद्धार हुआ, लेकिन प्रभु के नाम के प्रताप से तो न जाने कितने दुष्ट सुधर गये, कितने दुष्टों ने दुष्टता का त्याग कर जीवन में प्रभु के नाम को बसा कर परम कल्याण को प्राप्त किया, चारों युगों में, तीनों लोकों में और तीनों कालों में केवल नाम का सिमरण करने से ही जीव शोक से रहित हो गये। देखो कैसी शक्ति है राम के नाम में, कितना पुराना झगड़ा चल रहा हो, आपस में बोलचाल न हो, सामने हाथ जोड़ कर राम–2 कह दो, झगड़ा समाप्त हो जाता है।

एक बार देवताओं और ऋषियों ने मिलकर वेदों का मंथन किया। वेदों में क्या है? इसके लिए वेदों का मंथन किया गया। बड़े–2 मंत्र निकले, कोई ऋषि, कोई मन्त्र ले गये, कोई मन्त्र कोई देवता ले गये।

भगवान शंकर भी तो बैठे थे। लेकिन थे बहुत सन्तोषी। किसी ने पूछा कि आप कुछ नहीं ले रहे? भगवान शंकर जी ने कहा जब सब का मन तृप्त हो जायेगा, तब जो बचेगा तो देखेंगे। सब मन्त्रों के बाद में छोटा सा राम मन्त्र निकला। इसे छोटा जानकर किसी ने नहीं लिया। सब को लगता है कि मन्त्र कभी छोटा बड़ा नहीं होता। मन का भाव छोटा बड़ा होता है। मन्त्र में शक्ति तो मन की श्रद्धा से पैदा होती है। राम–नाम को भगवान शंकर ने उठा लिया और अपने कंठ में रख लिया। श्री राम नाम का अमृत भगवान शंकर जी के कंठ में है। कुछ समय बाद देवताओं को अमर करने के उद्देश्य से भगवान ने समुन्द्र मंथन कराया। उसमें से कई प्रकार के रत्न निकले। इन्हीं के साथ समुन्द्र से भयानक विष भी निकला। सारी सृष्टि जलने लगी। देवता तो दौड़कर ब्रह्म जी के पास पहुँचे, बोले प्रभु! जहर सबको जला रहा है। हमारी रक्षा करो। ब्रह्म ने कहा आप काँच के घड़े में सारा विष भरकर ले आओ और भगवान शंकर को पिला दो। भगवान शंकर उन दिनों तप कर रहे थे। देवताओं ने कहा अगर भगवान शंकर ने विष पीने को मना कर दिया तो कह देना कि ब्रह्म ने प्रसाद भेजा है। प्रभु की आज्ञा लेकर देवता चल पड़े। भगवान शंकर को विष पिलाने, देखो स्वार्थी व्यक्ति का स्वभाव। अपने को अमर बनाने के कारण भगवान शंकर को मारने चल पड़े। वहाँ जाकर देवताओं ने भगवान शंकर जी को प्रणाम किया। भगवान शंकर ने सबसे आने का कारण पूछा तो उन्होंने विष का घड़ा आगे कर दिया।

भगवान शंकर ने पूछा– इसमें क्या है? देवता बोले– विष है इसमें। भगवान शंकर ने कहा– विष मुझे क्यों दे रहे हो, देवताओं ने कहा, ये प्रभु ने आपके लिए प्रसाद भेजा है। ये सुनकर भगवान शंकर ने खुश होकर विष का घड़ा हाथ में ले लिया और खुशी–2 पी गये। हम लोग तो कई बार ईश्वर इच्छा को भी ठुकरा देते हैं? इसलिए दु:ख उठाते हैं। भगवान शंकर ने विषपान तो किया, लेकिन उसे अपने अन्दर नहीं जाने दिया। कण्ठ में ही रखा, यह देखकर देवता सारे डर के मारे भाग गये। अगर हमारे सामने प्राण निकले तो हत्या के अपराध में हम पकड़े जायेंगे। ब्रह्म जी के पास जाकर सारी बात कह सुनाई। संध्या का समय होने वाला था। ब्रह्म जी ने कहा कि आप विष पान करा आये हो। अब जाकर उनका पता तो कर आओ। डर के कारण कोई जाना नहीं चाहता। ब्रह्म जी की आज्ञा मान कर देवता डरते हुए शंकर जी के पास पहुँचे। उन्हें देखकर देवता चाकित हो गये। शंकर जी ने देवताओं से पूछा– अब कौन–सा प्रसाद लाये हो। देवताओं ने कहा कि हम तो आपका पता करने आये थे। आप इतना भयानक विष पीकर विश्राम कैसे कर रहे हो? भगवान शंकर जी ने कहा कि ये तो तुम्हारा भ्रम था कि उसमें विष है। मेरे लिए तो प्रभु का प्रसाद था। प्रसाद तो अमृत हुआ करता है।

भगवान शंकर बोले देखो भाई, विष तो तुम लेकर आये थे और मेरे कण्ठ में राम–नाम रुपी अमृत पहले ही

रखा हुआ था। जैसे ही तुम्हारे विष में मैंने अपने कण्ठ के राम राम रूपी अमृत को मिलाया तो विष भी मेरे लिए विश्रामदायक बन गया। मनुष्य के जीवन में ऐसे अनेकों अवसर आते हैं, जब जगत के विष के कड़वे घूंट पीने पड़ेंगे। दुःख, अपमान तुझे सहने पड़ेंगे, दुनियाँ के दूसरे लोग शायद आपको प्यार दें, मान दें, जो आपके अपने हैं, वो आपको कभी मान–सम्मान नहीं देंगे। भगवान शंकर दुनियाँ को ये समझाना चाहते हैं कि आप भी कड़वाहट को यानि विष को गले तक ही रखना। नीचे मत उतारना। इस दुनियाँ की कड़वाहट को दिल तक ले जाओगे तो जीना बड़ा मुश्किल हो जायेगा।

इसकी जलन से बचना हो तो हर समय कंठ में श्री राम–नाम का अमृत रखो, विष की जलन से बच जाओगे। जो कार्य अग्नि, सूर्य और चन्द्रमा भी नहीं कर सकते। वह राम–नाम कर देता है। –जय गुरुदेव

गुरु का ज्ञान

एक बार की बात संत उपदेश कर रहे थे कि सच्चे गुरु अपना ज्ञान सबको नहीं देते, विशेष करके किसी–2 को ही देते हैं। यह सुनते ही श्रोताओं में से एक सेठ खड़ा होकर बोला, यह सरासर अन्याय है। गुरु को समदर्शी होना चाहिए, अपना गुप्त रहस्य ज्ञान सबको देना चाहिए। सन्त शान्त रहे। उस दिन उन्होंने सेठ को कुछ नहीं कहा। कुछ दिन बीते तो सन्तों ने उस सेठ के यहाँ एक प्रसिद्ध जुआरी को भेजा और कहा कि सेठ से एक हजार रुपये एक महीने के लिए कर्ज रूप में ले आओ। वह जुआरी सेठ के पास गया और रूपये मांगे तो सेठ ने रूपये देने से मना कर दिया। दूसरे दिन संत जी ने एक ईमानदार व्यक्ति को एक हजार रूपये कर्ज के रूप में एक महीने तक के लिए ले आने को कहा। वह ईमानदार सेठ के पास गया। रूपये मांगे, तो सेठ ने उसे रूपये दे दिये।

फिर संतों ने उस सेठ को अपनी कुटिया पर बुलाया और कहा– तुम्हारे पास दो व्यक्ति कर्ज रूप मे रूपया मांगने आये, दोनों को समदृष्टि रखकर दोनों को रूपये क्यों नहीं दिये, एक ही को क्यों दिये? उसने कहा– भला मैं जुआरी को रूपये क्यों देता। वह तो जुए में हार जाता।

संत जी ने कहा– भाई इसी तरह से गुरु भी अपना ज्ञान सुपात्र को ही देते हैं, कुपात्र को नहीं। गुरु ने अपने ज्ञान द्वारा सेठ की शंका खत्म कर दी। –जय गुरुदेव

शुगर

आजकल शुगर (Diabities) एक आम बीमारी हो गई है। शुगर का कम या ज्यादा होना, दोनों ही खतरनाक हैं। आपको इसका स्थायी ईलाज बता रहे हैं, जिससे शीघ्र ही शुगर नियन्त्रण में आ जायेगी और सभी पाठकों से निवेदन है कि हो सके तो इस मैसेज को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाएं, ताकि दूसरे लोग भी इससे लाभ उठा सकें।

सामग्री –

1. गेहूँ का आटा – 100 ग्राम
2. गोंद – 100 ग्राम
3. जौं – 100 ग्राम
4. कलौंजी – 100 ग्राम

तैयार करने की विधि – ऊपर दी गई सभी सामग्री को 5 कप पानी में डालें तथा 10 मिनट तक उबालें। अब इसे स्वयं ठंडा होने दें। जब ये ठंडा हो जाए तो इसे छान कर पानी की किसी बोतल या जग में डाल कर रख लें।

प्रयोग की विधि – हर रोज सुबह खाली पेट एक छोटा कप इस पानी को पीयें और इस प्रकार सात दिन तक पीवें। अगले हफ्ते फिर एक दिन छोड़ कर पीयें। इस प्रकार 2 हफते के उपचार के बाद आप बिल्कुल नार्मल महसूस करेंगे। और आप बिना किसी प्राब्लम के सामान्य भोजन ले सकते हैं।

क्योंकि इसमें प्रयोग की जाने वाली कुदरती चीजें हैं और इन्हें लेना कोई नुक्सान देह नहीं है। इसलिए जिन को कोई संदेह हो तो वे बिना किसी नुक्सान के कोशिश कर सकते हैं। क्योंकि इसका कोई साईड इफैक्ट नहीं है। – जय गुरुदेव

सधन्यवाद सहित DR. TONY ALMEIDA
(Bombay Kidney Speciality expert)

पाँच प्रकार की सन्तान

सन्तान ! एक ऐसा शब्द जिसकी हर गृहस्थी को चाहना रहती है। सन्तान सुख दे या दुःख! पर हर इन्सान की प्यारी होती है अपनी सन्तान। क्या आप जानते हैं शास्त्रों में सन्तान के पाँच प्रकार बताये गये हैं –
1. न्यासानुबन्धी, 2. ऋणानुबन्धी, 3. बैरानुबन्धी, 4. उपकारानुबन्धी, 5. उदासीन – ये पाँच प्रकार के पुत्र होते हैं।

1. **न्यासानुबन्धी** – ऐसी सन्तान दूसरे का रुपया पैसा, गहना–सोना, चांदी धरोहर हड़पने वाले के यहां पैदा होती है। अच्छे गुणों वाली सन्तान होकर माता–पिता को प्रभावित कर अपनी धरोहर को बीमारी पढ़ाई आदि में खर्च करा कर चली जाती है।

2. **ऋणानुबन्धी** – जो व्यक्ति दूसरे का ऋण लेकर बिना चुकाये मर जाता या मुकर जाता है। उसके यहां ऐसा निर्दयी, निष्ठुर स्वभाव वाला, कटु बोलने वाला, पुत्ररुप में पैदा होकर माता–पिता को लात–घूंसा मारकर अपना कर्ज वसूलता है। इसी कोटि के पुत्र संसार में ज्यादा पैदा होते हैं।

3. **वैरानुबन्धी** – पूर्व जन्म में वैर भाव से किसी को दुःख पहुंचाया हो, तो वह अपना बैर चुकाने के लिए इस जन्म में पुत्र होकर पैदा होता है और माता–पिता को बुरी तरह से मारता–पीटता व उनकी दुर्गति कर भाग जाता है।

4. **उपकारानुबन्धी** – पूर्व जन्म का सुख चुकाने के लिए पुत्ररुप में पैदा होता है। ऐसा पुत्र बड़ा सुशील माता–पिता का आज्ञाकारी और उनके मरने पर उनकी सद्‌गति पिण्डदान श्राद्धादि करने वाला होता है।

5. **उदासीन पुत्र** – जो किसी प्रकार का भला–बुरा चुकाने के लिए जन्म नहीं लेता है और न किसी प्रकार का राग–द्वेष करता है। वह सदा सन्तोषी जीवन व्यतीत करता है। इसी तरह पुत्र की तरह स्त्री, माता–पिता आदि सम्बन्धी भी समझना चाहिए।

पहेली नं0 3

– जय गुरुदेव

पिछली पत्रिका में पहेली नं0 2 के लिए हमें अनेक पत्र मिले। बहुत से पाठकों ने ई–मेल द्वारा भी जवाब दिया। परन्तु सही उतर बहुत कम पाठकों ने ही दिए। इनमें भाग्यशाली विजेता हैं– धीरज भाटिया (dheeraj.bhatia007@gmail.com), करूणा (karuna.jgd@gmail.com)। अपने पुरस्कार का लेने हेतू सम्पादक से सम्पर्क करें।

पहेली का सही जवाब था –
1. श्री श्री 1008 श्री योग शब्दानन्द जी महाराज, व उनसे सम्बन्धित पुस्तक थी – (श्री योग अनुभवी गीता)
2. श्री श्री 1008 श्री स्वामी अनुभवानन्द जी महाराज (श्री योग अनुभव वाणी)
3. श्री सन्त सुखदेवानन्द जी महाराज (प्रेम पथ के राही)
4. श्री सन्त पुरूषार्थानन्द जी महाराज

और अब पहेली नं0 3 :

पहले जीव को जान चाहिए, फिर जीने का सामान चाहिए
माया चाहिए, साथ ही मान चाहिए
फिर रोटी, कपड़ा, गाड़ी और मकान चाहिए
बाकी आई कोई मुसीबत .... तो भगवान चाहिए ।

दो ही वस्तुएं आदमी को दुःख देती हैं – एक अभाव... दूसरा स्वभाव !
आपको बताना है किन सन्तों ने ये बात 'श्री योग अनुभव वाणी' के माध्यम से कही है और कब ?

उपरोक्त पहेली का जवाब आप इस पते पर भेज सकते हैं –
1. कुटिया शान्त सरोवर, राम नगर, टोहाना

2. ब्रह्म ज्ञान मन्दिर, एफ ए–47, विशाल कालोनी, नांगलोई, दिल्ली
आप अपने जवाब ई–मेल से भी भेज सकते हैं–
shriyoganubhavvani@gmail.com

Follow us- www.facebook.com/sarv.sukh.1
on twitter: @ShriYogJi,

होली की धूम

श्री गुरु महाराज जी एवं श्री स्वामी जी महाराज जी की असीम कृपा से एवं श्री महाराज जी के आर्शीवाद से इस बार ''होली उत्सव'' का अनूठा रंग बरसा। 4 मार्च से 27 मार्च तक हिसार, पंजाब, टोहाना, दिल्ली आदि विभिन्न क्षेत्रों को श्री महाराज जी एवम् संत सर्वयोगानन्द जी ने प्रेम रंग से एवम् ज्ञान रंग से संगतों पर अपार कृपा की।

वास्तव में यह होली का त्यौहार ऐसा ही है कि अपने जीवन को खुश रंग बनाने के लिए सब चिन्तायें, सब दुःख भुलाने के लिए और इस पर भी जब जब श्री महाराज का आर्शीवाद मिल जाये, तो आनन्द की सीमा ही नहीं रहती। दिन में तीन–2 बार होली सत्संग का दरबार सजा करता। श्री महाराज जी हर दिन नये–2 शहरों में रंग बरसाते। कभी टोहाना, कभी बुढ़लाडा, कभी हिसार, कभी हाँसी, कभी फतेहाबाद, सब तरफ की सभी संगतों को होली की मस्ती में गोपियों की तरह मस्त बना ही दिया। इधर सन्त सर्वयोगानन्द जी ने पूरे टोहाना शहर को इतना मस्त बना दिया कि धरती के कण–2 को रंगीन बना दिया। हर नगर, हर मौहल्ला, हर गली ऐसी नहीं कि जिस गली में कन्हैया ना आये हों। इतना आनन्द बरसा हर क्षेत्र में जिसे पाने वाले भी वर्णन नहीं कर पा रहे।

विशेष 'होली महामहोत्सव' 27 मार्च को प्रातः 11 से 2 बजे तक टोहाना कुटिया में होली उत्सव के दौरान सभी भक्तों का तन ही नहीं, मन भी रंगा गया। जब श्री महाराज जी अपने पावन अमृतमयी प्रवचनों में बताते हैं कि सभी से प्रेम करो। किसी का दिल मत तोड़ो। प्रेम का अर्थ है कि बिना अपेक्षा के सबको देना। प्रेम के सम्बन्ध में दो बाते हैं, पहली बात– दूसरों को प्रेम देना तथा दूसरी बात परमात्मा से प्रेम करना। इस होली उत्सव पर यही मन में धारणा करें कि जिस प्रकार फाल्गुन महीने में पुराने पत्ते झड़कर नये आ जाते हैं, हम भी बीती बातें भुलाकर अपने जीवन को नये रंगों से भरें।

हर पल सावधानी पूर्वक चलें। अपने जीवन में स्वयं निगरानी रखें, अपने धर्म को सदैव देखते चलें। यदि धर्म पर चलेंगे तो भगवान बिल्कुल उसी तरह रक्षा करेंगे, जिस तरह प्रहलाद भक्त की थी। होलिका जल गई, प्रहलाद का बाल भी बाँका नहीं हुआ। क्योंकि उसने स्वयं को प्रभु चरणों में समर्पित कर दिया था, उसे प्रभु पर विश्वास था। जब उन्हीं पर सौंप कर हम अपने धर्म पर चलने के लिए तैयार होते हैं, तो प्रभु रक्षा अवश्य करते हैं। हमें पहले कन्हैया की बांसुरी की तरह अपने–आपको अन्दर से खाली करना होगा और फिर हम अपने जीवन की बागडोर उस मालिक के हाथों सौंप दें। और अगर श्रद्धा विश्वास से हम पूर्ण रुप से समर्पित हो जायेंगे, तो प्रभु कृपा भी हम पर होगी। इतनी प्रभु कृपा हम पर बरसेगी कि बस आनन्द ही आनन्द हो जायेगा।

होली है और धूम मची है।
नई उमंग से धरा सजी है ।।

प्रातः गुलाबी किरणों का है,
रंगों से है छुपा छुपाई,
आओ सखी री भीगी मेहन्दी,
फिर से ऋतु होली की आई।

होली है और धूम मची है ।
नई उमंग से धरा सजी है ।।

इन्हीं नई उमंगों, नई तरंगों को मन में धारण करते हुए हम होली उत्सव का आनन्द लें तथा सन्त महापुरुषों के प्रवचनों को मन में धार कर अपने जीवन को आनन्दमयी बनायें।

प्रिय भक्तजनों!

यदि आपको इस पत्रिका से कोई शिकायत है अथवा कोई सुझाव, जिससे हम पत्रिका को और बेहतर बना सकते हैं तो, हमें लिखें। हमें आपके पत्रों का बेसब्री से इंतजार रहेगा। आप अपने पत्र निम्न पते पर भेज सकते हैं अथवा ई–मेल भी कर सकते हैं–

श्री योग अनुभव वाणी

ब्रह्म ज्ञान मन्दिर

एफ ए–47, विशाल कालोनी, नांगलोई, दिल्ली

कुटिया शान्त सरोवर

राम नगर, टोहाना

shriyoganubhavvani@gmail.com

संत चरित्र गतांक से आगे...

ध्रुव

..... जब ध्रुव जी ने सांस लेना बन्द कर दिया तो उनके हृदय में स्थित भगवान ने सांस लेना बंद कर दिया और इस प्रकार भगवान के उदर में स्थित कोटि ब्रह्ाण्ड ने सांस लेना बंद कर दिया। तब सबने भगवान से प्रार्थना कर कि इस प्रकार तो समस्त संसार का अन्त हो जाएगा। तब भगवान ने वृन्दावन में यमुना के किनारे ध्रुव को दर्शन देने के लिए प्रकट हुए। भगवान ने देखा कि छोटे से पाँच वर्ष के ध्रुव जी ने मेरे लिए कितने कष्ट उठाए। खाना–पीना–सोना सब छोड़ दिया। कुछ देर खड़े एकटक ध्रुव जी को देखते रहे। कितना प्यारा छोटा सा भक्त है। ध्रुव पर से दृष्टि हटती नहीं है। ध्रुव जी ने अभी आँखें नहीं खोली हैं। तब भगवान ने ध्रुव के हृदय पर से अपनी छवि खींची। जो छवि हृदय से हटी तो झट से ध्रुव जी ने आँखें खोल दी। क्या देखते हैं कि भगवान सामने खड़े हैं। अद्भुत दृश्य है भगवान की नजरें ध्रुव जी से नहीं हटती और ध्रुव की नजरें भगवान से नहीं हटती, मानों आँखों में भगवान जी को पी जाएंगे। कैसा अद्भुत मिलन है भक्त और भगवान का।

ध्रुव जी सोच रहे हैं कि क्या कहूं भगवान से ? स्तुति वन्दन तो आता नहीं। भगवान समझ गए और अपना शंख ध्रुव जी के गाल से लगाया। ध्रुव जी को समस्त वेदों का ज्ञान हो गया। भगवान ने ध्रुव जी को अपनी गोद में बैठाया और कहा– ध्रुव! तुम्हें पिता की गोद में बैठना है? ध्रुव जी की आँखों से अश्रु बह निकले। बोले– प्रभु! परमपिता की गोदी में बैठने के बाद अब मुझे संसार के पिता की गोद में नहीं बैठना है। आपको पाने के बाद अब मेरी कुछ इच्छा भी नहीं है। अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। बस आप मुझे अपनी अखण्ड भक्ति का वरदान दीजिए। भगवान ने ध्रुव जी को सबसे ऊँचा स्थान दिया। भगवान ने ध्रुव को वचन दिया– ''घोर तपस्या करके तुमने हमारा मन मोह लिया है। जब तक सृष्टि है, तब तक तुम्हारी भक्ति व नाम प्रसिद्ध रहेगा। जाओ तुम्हें राज सुख प्राप्त होगा और तुम्हारा नाम सदा अमर रहेगा।'' यह वर देकर भक्त को घर भेजकर भगवान विष्णु अपने आसन की ओर चल पड़े।

राजा उत्तानपात को जब ध्रुव के बारे में पता चला, वो अत्यन्त लज्जित हुए। स्वयं रथ लेकर अपने पुत्र का स्वागत करने के लिए खुशी से आये। प्रजा ने मंगलाचार व खुशी मनाई। राजा ने अपना सारा शासन उसे सौंप दिया।

नारद जी माँ सुनीति के पास गए और उनसे कहा कि हे रानी! आपकी गोद सफल हुई। आपके पुत्र के साथ–2 आपका नाम भी सदैव दुनियां में अमर रहेगा। आप जैसी माँ पाकर ध्रुव धन्य हुआ और ध्रुव जैसा पुत्र पाकर आप धन्य हैं।

उधर सुरूचि के बेटे उत्तम की अन्त में मृत्यु हो गई। सुरूचि अन्त तक ध्रुव के साथ किए अपने व्यवहार के लिए पछताती रही।

श्री हरि के वरदान से ध्रुव का नाम राज करने के बाद संसार में अमर हो गया। आज उसे ध्रुव तारे के नाम से याद किया जाता है। वह जीवन का एक अमिट और अडोल केन्द्र है।

– जय गुरुदेव

प्रेम का जब प्रकाश हुआ,
और हृदय आनन्द रूप हुआ।
जीवन तब उसका धन्य हुआ
वह नित्य सुख में लीन हुआ।।

मनुष्य जन्म, हीरा जन्म

नर तन पाया यत्न कर ऐसा जिससे यह करतार मिलें
ऐसी उत्तम जून पदार्थ न फिर बारम्बार मिलें ।
यज्ञ, दान और पूजा पाठ सब इसी जून से होते
अगली जून वही काटते हैं जो इसी जून में बोते हैं।।

हरिद्वार में एक फकीर भीख माँगकर अपना गुजारा करता था। कई बार उसको देखा। उसकी दोनों बाजू नहीं थी। एक दिन उससे पूछा गया कि बाबा आप भिक्षा में रूपये पैसे तो माँग लेते हैं, लेकिन बिना बाजुओं के आप खाना कैसे खाते हो ? फकीर ने उत्तर दिया, जब धन एकत्रित हो जाता है, तो सामने होटल वाले को आवाज देता हूँ कि धन एकत्रित हो गया है, इसे ले जा और मुझे रोटी ला दे। होटल वाला लड़के को भेज देता है। वह धन उठाकर ले जाता है और रोटियाँ व सब्जी लाकर मुझे दे देता है।

फिर पूछा कि रोटियाँ तो तुम्हारे सामने लाकर रख दी जाती हैं, लेकिन आप रोटी खाते कैसे हो ?

वह बोला– बाजू न होने के कारण मैं अपने आप भोजन खा नहीं सकता तो मैं सड़क पर आते–जाते राहगीरों को आवाज लगाकर बड़े विनम्र भाव से कहता हूँ भगवान तुम्हारे हाथ सलामत रखे, मुझ पर दया करो। मुझे भोजन खिला दो, मेरे दोनों बाजू नहीं हैं। हर व्यक्ति तो सुनता नहीं, पर किसी न किसी को मुझ पर दया आ जाती है और अपने हाथ से रोटी का टुकड़ा तोड़कर मेरे मुँह में डाल देता है और इस तरह मैं भोजन खा पीता हूँ।

फिर पूछा, इस प्रकार दूसरों की दया से आप रोटी तो खा लेते हो, लेकिन जल कैसे पीते हो? फकीर बोला यह मेरे सामने मटका रखा है। उसके पास बैठकर एक टाँग से इस मटके को सहारा देता हूँ और दूसरी टाँग से इस मटके के नीचे अपना बर्तन सरका देता हूँ। पानी बर्तन में आ जाता है। फिर पशुओं की भाँति झुककर बर्तन से पानी पी लेता हूँ।

फिर पूछा– यहाँ मच्छर बहुत हैं, यदि मच्छर काट ले तो फिर क्या करते हो? वह फकीर बोला– यदि मच्छर माथे पर काट लें तो दीवार के सहारे सिर रगड़ता हूँ और मच्छर पीठ पर काट ले तो जैसे मछली पानी के बिना तड़पती है, उसी प्रकार जमीन पर लेटता हूँ, तड़फता हूँ, चिल्लाता हूँ।

देखो– केवल दो बाजू न होने के कारण कितनी बुरी स्थिति हो गई। यह मानव तन वास्तव में ही बड़े भाग्य से प्राप्त हुआ है। इस शरीर का प्रत्येक अंग बड़ा अनमोल है। दुनिया की कोई वस्तु इसका मुकाबला नहीं कर सकती।

यह युवावस्था केवल बर्बाद करने के लिए नहीं मिली, ये कान निन्दा चुगली करने के लिए नहीं मिले, आँखें केवल पाप ढूँढ़ने के लिए नहीं मिली। यह पाँचों इन्द्रियाँ केवल मौज मस्ती के लिए नहीं मिली। यह वाणी मिली है– मीठा और मधुर बोल बोलने के लिए, प्रभु का स्मरण करने के लिए। यह हाथ मिले हैं दूसरों की सहायता के लिए, आँखें मिली हैं। प्रभु दर्शन करने के लिए न कि पाप ढूँढ़ने के लिए।

नींद निशानी मौत की उठ कबीरा जाग ।
और रसायन छोड़ के नाम रसायन लाग ।।

– जय गुरुदेव

ज्यों पारस के परस से, लोहा कंचन होय ।
त्यों सन्तन के संग से, जड़ से चेतन होय ।।
दुरमति भाजे तुरत ही, चढ़े सुमति का रंग ।
जो जन मन वचन कर्म से, आये मिल सत्संग ।।

सतगुरु हमारा

तुम बिन नहीं कोई सतगुरु हमारा,
तुम्हारा ही केवल हमको सहारा ।

1. नाते जगत् के न साथ निभायें,
दुःख कष्ट आने पे आँखें चुरायें ,
पर तुमने दुखियों को सदा है संभारा ।

2. जीवों के तुम हो ग़मख़्वार सतगुरु,
मुसीबत में होते हो मददगार सतगुरु,
करते मदद फौरन जिसने भी पुकारा ।

3. बहुत दुःख उठाये हैं तुम से दूर रह कर,
ठोकरें हैं खाई बहुत मेरे प्रभुवर,
दुःखों से देते हो तुम्हीं छुटकारा ।

4. महिमा सुन के तुम्हरी शरण में हूँ आया,
तुमने है दुखियों को सदा अपनाया,
मैंने भी लिया है असारा तुम्हारा ।

5. जीवन की नैया डगमगा रही है,
फँस के भंवर में डूबी जा रही है,
कर्णधार बनके कर दो नितारा ।

6. तुमने है लाखों की बिगड़ी संवारी,
मेरी भी संवारो दाता उपकारी,
'दास' ने दर पे दामन पसारा ।

कर्म का फल

आपकी इच्छा हो या ना हो कर्म का फल मिलता ही है, परन्तु लौकिक फल की इच्छा रखने वाले का मन अशान्त रहता है। अपेक्षा से अशान्ति का जन्म होता है। कुछ अपेक्षा है, कुछ चाहिए और जब यह कुछ नहीं मिल पाता तब अशान्ति आती है। आपके हृदय में नारायण का निवास है। लक्ष्मी जी के पति आपके हृदय में विराज रहे हैं, फिर आपको क्या चाहिए? किसी अपेक्षा को न रखकर आप सत्कर्म कीजिए, भक्ति कीजिए। भक्ति भगवान के लिए कीजिए, अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए नहीं। भक्ति का फल भोग नहीं है, संसार–सुख नहीं है। सम्पत्ति नहीं है। संतति भी नहीं है।

कुछ लोग यह समझकर भक्ति कर रहे हैं कि भक्ति करने से भगवान धन देंगे। पर भक्ति का फल धन नहीं है। भगवान की भक्ति भगवान के लिए कीजिए। भगवान साधन नहीं हैं, वे तो साध्य हैं। भगवान से कुछ ओर मांगिये। धन मांगने पर भगवान साधन होंगे और लौकिक सुख धन साध्य। कुछ लोग भगवान से मांगते हैं– हे प्रभु! सभी मनोकामनाएं पूर्ण करना।'' पर मनोकामनाओं का अन्त नहीं है। एक कामना पूर्ण होने पर, दूसरी जाग जाती है।

प्रेम में लेने की इच्छा नहीं होती। प्रेम में समर्पण की भावना होती है। प्रभु आपको धन देते हैं, सुख देते हैं। आपको जिसकी जरूरत होती है, प्रभु देते हैं। प्रभु तो नास्तिक को भी देते हैं। मांगने की जल्दी मत कीजिए। मांगने से प्रेम कम हो जाता है। प्रभु बिना मांगे ही देते हैं। प्रभु कहते हैं– अरे! तुम्हारी योग्यता के अनुसार ही मैंने तुम्हें दिया है।

जिस तरह माता सन्तान को विवेक से देती है। बालक कितना माँगता है, यह न देखकर क्या और कितना, कब देना योग्य होगा, इसका विवेक रखकर देती है। घर में लड्डू बने हैं, पर माँ बालक को नहीं देती है, क्योंकि बालक के पेट में अजीर्ण है। आज लड्डू खाने पर बुखार आ जाये तो? माँ घर में जो कुछ बनाती है, बालक के लिए ही तो बनाती है। बालक के खाने से माँ प्रसन्न होती है। पर आज वह बालक को लड्डू नहीं देगी। प्रेम के कारण नहीं देती है। बालक दुःखी न हो, इसकी चिन्ता माँ को है।

परमात्मा का स्वभाव माता जैसा है। परमात्मा विवेक से देते हैं। प्रभु ने कम दिया हो तो मन को समझाइए कि मैं योग्य नहीं हूँ। मुझे अधिक धन मिलेगा, तो मेरा मन खराब होगा। इसलिए प्रभु ने मुझे कम धन दिया है।

भक्ति में समर्पण की भावना होती है। जहाँ कुछ लेने की इच्छा है, वहाँ भक्ति नहीं है, मोह है। गुलाब के फूल को देखकर नाक के पास ले जाने का मन हुआ तो वह मोह हुआ, पर सुन्दर फूल को देखकर ठाकुर जी के , गुरुदेव के चरणों में अर्पण करने की इच्छा जाग्रत हुई, तो वह भक्ति है। सुख को अपनी ओर खींचना मोह है। प्रेम में परमातमा को सुखी करने की इच्छा होती है।

– जय गुरुदेव

आगामी सत्संग कार्यक्रम

दिनांक	कार्यक्रम
1 अप्रैल 2013	ब्रह्म ज्ञान मंदिर, नांगलोई में सत्संग समारोह
5–7 अप्रैल 2013	विशाल सत्संग समारोह, रामगढ़, अलवर
11 अप्रैल 2013	श्री योग अनुभव आश्रम, हरिद्वार में श्री रामायण पाठ का शुभारम्भ
13 अप्रैल 2013	हरिद्वार में वैसाखी पर्व पर श्री रामायण पाठ समाप्ति एवम् भण्डारा
18 अप्रैल 2013	कुटिया शान्त सरोवर, टोहाना में सत्संग समारोह एवम् भण्डारा
19 अप्रैल 2013	कुटिया शान्त सरोवर, बुढ़लाडा में सत्संग समारोह
1 मई 2013	ब्रह्म ज्ञान मंदिर, नांगलोई में सत्संग समारोह
18 मई 2013	कुटिया शान्त सरोवर, टोहाना में सत्संग समारोह एवं भण्डारा
19 मई 2013	ब्रह्म ज्ञान सरोवर, बुढलाडा में सत्संग समारोह
24–26 मई 2013	श्री योग वाटिका बामनोली में श्री गुरु महाराज जी के दिव्य दरबार का शुभ मुहूर्त
28 मई 2013	ब्रह्म ज्ञान मंदिर, नांगलोई में श्री मद्भागवत् कथा प्रारम्भ
1 जून 2013	ब्रह्म ज्ञान मंदिर, नांगलोई में सत्संग समारोह
3 जून 2013	ब्रह्म ज्ञान मंदिर, नांगलोई में श्रीमद्भागवत् कथा समाप्ति
18 जून 2013	कुटिया शान्त सरोवर, टोहाना में सत्संग समारोह एवं भण्डारा
19 जून 2013	ब्रह्म ज्ञान सरोवर, बुढलाडा में सत्संग समारोह